हिंदी साहित्य का काव्यात्मक इतिहास

रजनी सिंह

संस्कृत-संस्कृति राष्ट्र जननी
हिन्दी भाषा विश्व सम्माननी
अस्तित्व-अभिमान अनुप्राणिनी
पहचान निज मान बखाननी

क्यों न हो निज भाषा का ज्ञान
यही तो है हमारी पहचान
अस्तित्व गौरव राष्ट्र प्रेम
यही तो है भाषा सम्मान

-रजनी सिंह

"डॉ० जया बंसल के लिए,
अमूल्य अनुराग ओत-प्रोत ।
बहुमूल्य सहयोग के लिए,
जीवन पथ बने अमोघ ॥"

अवलोकनार्थ / विचारार्थ

श्री चंद्रप्रकाश आर्य

- रजनी सिंह
27.03.2015

हिंदी साहित्य का काव्यात्मक इतिहास

◆
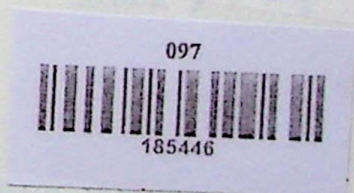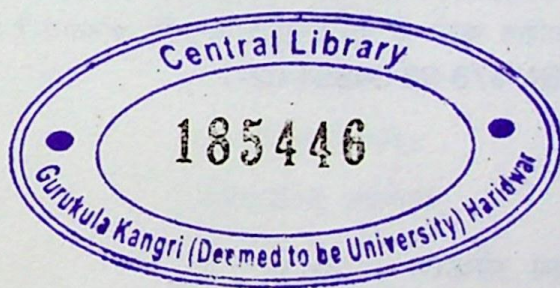
रजनी सिंह

लेखिका/कवयित्री की निम्न पुस्तकें प्रकाशित एवं उपलब्ध हैं :

1. झोंके बयार के	(काव्य-संग्रह).
2. मुड़ते हुए मोड़	(कहानी-संग्रह)
3. यत्र सीता तत्र नारी	(अध्यात्म गद्य-शोध)
4. नन्हीं जिज्ञासा	(बाल-काव्य)
5. दृष्टिकोण	(प्रतिक्रियाएँ)
6. प्रकृति मेरी प्रकृति	(प्रकृति-काव्य)
7. तथ्य-कथ्य	(साखी-संग्रह)
8. माँ तथाता	(काव्य-संग्रह)
9. कुछ-कुछ	(काव्य-संग्रह)
10. भूमिजा-भूमिका	(सीता-महाकाव्य)
11. माँ तथाता	(अनुवाद: तेलुगु)
12. आओ चलो सैर करें	(यात्रा-संस्मरण)
13. विहंगावलोकन	(कहानी-संग्रह)
14. झिलमिल तारे	(बाल-काव्य)
15. नारी ज्ञान शिरोमणी	(नारी गद्य-शोध)
16. प्रकृति कृति प्रकृति	(प्रकृति-काव्य)
17. चित्र विचित्र	(आत्मकथ्य-काव्य)
18. पीढ़ी दर पीढ़ी	(ऐतिहासिक उपन्यास)

प्राप्ति स्थल

रजनी प्रकाशन

रजनी विला, डिबाई-203393

मो०- 9412653980

समर्पण

(साहित्य-संस्कृति)

साहित्य यज्ञ समर्पित समिधा, शब्द-शब्द बूटी जड़ी ।
कूट पीस भावों की चाकी, संस्कृति पगी लड़ी ।।

◆

रजनी सिंह

रजनी सिंह

एक परिचय

जन्म-तिथि	:	15 दिसंबर ।
जन्म-स्थान	:	डिबाई - 203393 (उ०प्र०), भारत ।
शैक्षिक योग्यता	:	कला स्नातक (1960), अनेक क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रमाण-पत्र ।
संस्थापन	:	महिला सहयोग समिति (पंजी०), 1975 (एन०जी०ओ०) ।
		रजनी पब्लिक सी०सै० स्कूल (सी०बी०एस०ई०), 1982 ।
		राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (मा०सं० मंत्रालय), 2005 ।
		आर०जे० इंस्टीट्यूट ऑफ हायर ऐजुकेशन (चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ), 2009 ।
		रजनी पब्लिक जूनि० स्कूल, चौंड़ेरा, रजि०, 2004 ।
		कादंबिनी क्लब, डिबाई, 2005 ।
		भारत विकास परिषद्, विकास रत्न ।

साहित्यिक सृजन	:	करीब-करीब सभी विधाओं में डेढ़ दर्जन कृतियाँ प्रकाशित । अनेक शैक्षिक नारी-विमर्श पत्रिकाओं का प्रबंधन-संपादन तथा अनेक सम-सामयिक पत्र-पत्रिकाओं में लेख-विचार प्रकाशित । अनेक "शोधपरक आलेख" देश-विदेश के मंचों पर पाठ ।
सम्मान	:	राष्ट्रीय सहारा, अमर उजाला, रैड एण्ड वाईट द्वारा सम्मानित तथा अनेक सम्मान-पुरस्कार साहित्य मनीषियों तथा संस्थाओं द्वारा तथा शिक्षा के क्षेत्र में अलंकरण । समाज-सेवा में अनेक कार्य ।
विदेश-भ्रमण	:	अमेरिका, इटली, जापान, नेपाल, जर्मनी, हवाई, इजिप्ट, साउथ अफ्रीका, दुबई, आस्ट्रेलिया, फ्रांस, बेलजियम, नीदरलैंड और स्विट्जरलैंड आदि साथ ही इन देशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार-सद्भाव हेतु कार्य ।

पता	:	रजनी विला, डिबाई-203393 (उ०प्र०), भारत ।
दूरभाष	:	09412653980, 05734-265101, 264201
Website	:	www.rajnishiksha.com
E-mail	:	rajnisingh2009@yahoo.com

स्तुति......

ज्ञानदायिनी-विद्याप्रदायिनी, शब्द-शब्द में वास आपका ।
अक्षर बनते मोती माणिक, जड़ें-गढ़ें पुस्तक मनका ।।

कृपाकाँक्षी हम सब आतुर, मात् शारदे वर दे दे ।
वीणा मधुर संगीत सुनाकर, शीतल मन कर दे दे ।।

आस करूँ-विश्वास भरूँ, कृपा तुम्हारी पा जाऊँ ।
हूँ मैं अज्ञानी-अबोध, ज्ञानकोष यदि पा जाऊँ ।।

कर वंदन हिय नमन, कमलवासिनी हों प्रसन्न ।
पद्य रचूँ-इतिहास लिखूँ, सार्थक-सुगंध संपन्न ।।

जीवन-सरिता शीतल धार, तृप्त करें सारा संसार ।
चले लेखनी चढ़ पतवार, 'हिंदी साहित्य इतिहास' पार ।।

हिंदी-उत्सव खूब मनाएँ, भारतवासी समझ ये पाएँ ।
मातृभाषा हिंदी गंगा, निर्मल-जल अक्षुण्ण हर्षाएँ ।।

भाव मेरा अति सहज सरल, चरणन में माँ के तन-मन ।
विनती करूँ साष्टाँग प्रनाम, 'कृपा-दृष्टि' माँ करूँ नमन ।।

अनुक्रम

उच्छ्वास के आलोक में

1. दिव्य अनूठा काम 13
 डॉ० योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरूण' के प्रति 14
2. काव्यात्मक कलेवर में हिंदी साहित्य का इतिहास 15
 डॉ० कुमुद शर्मा के प्रति 17
3. शत-शत नमन – मामेकं शरणं 18
 धन्य पुष्प 19
 भाव भरे मन में अकुलाए 20

नमन करूँ शत बार

अभिव्यंजना 23
आचार्य प्रवर रामचंद्र शुक्ल 24

आदिकाल

प्रकरण-1 : सामान्य परिचय 25
प्रतिभावान् 26
हृदय हुलास 27
चहकती हिंदी 28
प्रकरण-2 : (अपभ्रंश काव्य) सामान्य परिचय 30

वीरगाथा काल

प्रकरण-3 : (देशभाषा काव्य) सामान्य परिचय 35
प्रकरण-4 : (फुटकल रचनाएँ) सामान्य परिचय 40

पूर्व मध्यकाल
(भक्तिकाल)

प्रकरण-1 : सामान्य परिचय 41
प्रकरण-2 : निर्गुण धारा : ज्ञानाश्रयी शाखा 45
प्रकरण-3 : निर्गुण धारा : प्रेमाश्रयी (सूफी) शाखा 48
प्रकरण-4 : सगुण धारा : रामभक्ति शाखा 51
प्रकरण-5 : सगुण धारा : कृष्णभक्ति शाखा 54
प्रकरण-6 : सगुण धारा : भक्तिकाल की फुटकल रचनाएँ 59

उत्तर मध्यकाल
(रीतिकाल)

प्रकरण-1 : सामान्य परिचय 64
प्रकरण-2 : रीति ग्रंथकार कवि : सामान्य परिचय 66
प्रकरण-3 : रीतिकाल के अन्य कवि : सामान्य परिचय 75

आधुनिक काल
(गद्य खण्ड)

प्रकरण-1 : सामान्य परिचय : गद्य का विकास तथा आधुनिक काल के पूर्व गद्य की अवस्था 82
प्रकरण-2 : गद्य साहित्य का आविर्भाव : सामान्य परिचय 86

आधुनिक गद्य साहित्य परंपरा का प्रवर्तन
(प्रथम उत्थान)

प्रकरण-1 : सामान्य परिचय 88
प्रकरण-2 : गद्य साहित्य परंपरा का प्रवर्तन : प्रथम उत्थान 90

गद्य साहित्य का प्रसार
(द्वितीय उत्थान)

प्रकरण-3 : सामान्य परिचय 93
प्रकरण-4 : गद्य साहित्य का प्रसार : सामान्य परिचय 95

गद्य साहित्य की वर्तमान गति
(तृतीय उत्थान)

प्रकरण-5 : सामान्य परिचय 101
प्रकरण-1 : काव्य खण्ड : पुरानी धारा 106
प्रकरण-2 : काव्य खण्ड : नई धारा (प्रथम उत्थान) 110
प्रकरण-3 : काव्य खण्ड : नई धारा (द्वितीय उत्थान) 112
प्रकरण-4 : काव्य खण्ड : नई धारा (तृतीय उत्थान) 115

छायावाद

जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत 119
व महादेवी वर्मा एवं स्वच्छंद धारा 120

उत्तर छायावाद

प्रगतिवाद समीक्षक एवं प्रमुख कवि	121
प्रयोगवाद प्रवर्तक एवं प्रमुख कवि	122
तार सप्तक, दूसरा सप्तक, तीसरा सप्तक व चौथा सप्तक	122-123
नई कविता कवि एवं अकविता कवि	123
गीत-नवगीत कवि	124
ओशो-ओशो	126
उद्‌बोधन	128

उच्छ्वास के आलोक में

दिव्य अनूठा काम

रजनी सिंह ने कर दिया, दिव्य अनूठा काम !
चमकेगा दिन-रात अब, हिंदी-जग में नाम !!

ढाल दिया है काव्य में, हिंदी-काव्य-इतिहास !
किया शारदा ने स्वयं, कलम-नोक पर वास !!

जितने हैं विद्वान जन, सब का है गुण गान !
बड़ी विलक्षण सोच है, शब्द-शब्द में जान !!

गद्य बना आधार था, अब तक सदा हमेश !
रचा काव्य-इतिहास यह, किया प्रयत्न विशेष !!

आदिकाल से हो शुरू, भक्ति-रीति का वास !
वर्तमान तक आ गया, साहित्य का इतिहास !!

यह प्रयास बेजोड़ है, अनुपम कार्य विशेष !
रजनी सिंह की सोच का, होगा मान हमेश !!

हिंदी की सेवा सतत्, करें दिव्य श्रृंगार !
चिरजीवी रजनी रहें, पाएँ कीर्ति अपार !!

सरल, सहज, शब्दावली, अर्थों की भरमार !
हजार वर्ष की शब्द-कथा, गूंथी लेकर सार !!

मेरी है यह कामना, कृपा करें वागीश !
रजनी के मन में बसें, स्वयं सदा जगदीश !!

माँ वागीश्वरी का मिले, लेखनी को वरदान !
हिंदी-जग में हो अमर, रजनी सिंह का नाम !!

74/3, न्यू नेहरू नगर — **-डॉ. योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरूण'**
रूड़की- 247667. — -डी.लिट्.
दिनांक : 13 मई, 2014. — पूर्व प्राचार्य

डॉ. योगेंद्र नाथ शर्मा 'अरूण' के प्रति

हूँ अभिभूत करूँ भावों से अभिनंदन ।
ज्योतिर्मय बगिया महके खिले प्रीत उपवन ।।
लिखे सुवासित भाव काव्य माला में गूँथ दिए ।
अनुरागी 'योगेंद्र नाथ' अरूणिम प्रकाश किए ।।
दिव्य सोच मधुरिम बानी मन भाषा शुभांकर ।
उमगत मन मेरा स्वर्णिम हुआ काव्य प्रभाकर ।।
करूँ समर्पित धन्य अंजलि हृदय घंटिका बाजे ।
सदा रहें पल्लवित स्नेह मधु मणिका छाजे ।।

काव्यात्मक कलेवर में हिंदी साहित्य का इतिहास

साहित्य का इतिहास साहित्यिक कृतियों के माध्यम से जीवन की निरंतरता और परिवर्तनशीलता के विविध आयामों को खोजता और समेटता है । उसकी व्याख्या करता है । साहित्य के इतिहास दर्शन में सामाजिक संरचना, जीवन पद्धतियों और युग-चेतना का उद्‌घाटन होता है । भारतीय रचनाकारों ने भारतीय समाज के इतिहास और परिवर्तन को देखा-समझा और उसे पूरी समग्रता में सजगता के साथ साहित्य में समेटा। इसीलिए साहित्य का इतिहास लेखन व्यापक जीवन को आत्मसात् करने वाले गंभीर चिंतन कर्म में पर्यवसित हो जाता है ।

हिंदी साहित्य की ऐतिहासिक विरासत को, उसके मानक तथ्यों को सहेजने और उन पर चिंतन-मनन, अवलोकन की प्रक्रिया में हिंदी साहित्य के इतिहास के ग्रंथों का प्रणयन हुआ । लेकिन आचार्य रामचंद्र शुक्ल इतिहास आधारित हिंदी साहित्य की सुसंबद्ध एवं क्रमिक शृंखला को काव्यात्मक कलेवर में प्रस्तुत करने का प्रयास संभवतः पहली बार रजनी सिंह की पुस्तक 'हिंदी साहित्य का काव्यात्मक इतिहास' के माध्यम से सामने आया है । रजनी सिंह का संवेदनशील मन कवयित्री के रूप में उनके कविता-संग्रहों के माध्यम से प्रकट होता रहा है । कविता के ढाँचे में साहित्य का इतिहास लेखन अपने-आप में भिन्न और अनूठा प्रयास है ।

साहित्य में भाषा और भाव का अटूट संबंध है । इसलिए पुस्तक के प्रारंभ में हिंदी भाषा की शक्ति और सामर्थ्य के प्रति अटूट विश्वास व्यक्त करते हुए हिंदी की विकास-गाथा की ओर पाठकों को प्रस्थान कराया गया है ।

इस इतिहास ग्रंथ को पढ़कर जाना जा सकता है कि हिंदी की विशाल परंपरा को समृद्ध करते हुए अवधी, ब्रज और खड़ी बोली में कितना अकूत साहित्य सृजन हुआ । साहित्य के परिदृश्य में खड़ी बोली ने अपने परिष्कार-परिमार्जन के साथ-साथ और बाद में गद्य की अनेक

विधाओं में हिंदी ने किस तरह अपनी रचनात्मक शक्ति दिखाई । यह पुस्तक कविता की सहज-सरल भाषा में हिंदी साहित्य और साहित्यकारों के रचनात्मक अवदान का परिचय देती है ।

सूचना विस्फोट और उच्च प्रौद्योगिकी के युग में संक्षिप्तीकरण की कला का अपना वैशिष्ट्य है । हिंदी साहित्य के विषयनिष्ठ ज्ञान की जगह वस्तुपरक ज्ञान पर आधारित रजनी सिंह की यह पुस्तक हिंदी साहित्य की बहुविध छवियों की झाँकी प्रस्तुत करती है । यह वस्तुतः काव्यात्मक कलेवर में आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इतिहास पर आधारित हिंदी साहित्य का वस्तुनिष्ठ इतिहास है, जो हिंदी साहित्य के इतिहास में सृजनात्मक उपलब्धियों के रूप में दर्ज कृतियों का स्मरण कराता है। हिंदी के महारथियों को नमन करता है ।

हिंदी साहित्य के उद्‌भव और विकास-यात्रा के विस्तृत फलक पर समाविष्ट महत्वपूर्ण दस्तावेजों को मात्र 129 पृष्ठों की संक्षिप्त काव्यात्मक पुस्तक में समेटकर रजनी सिंह ने एक कठिन और श्रमसाध्य कार्य किया है । यह उनके संकल्पशील मन और हिंदी के प्रति उनकी निष्ठा का परिणाम है । हिंदी 'साहित्य सरोवर' में डुबकी लगाने की 'मन में जगी उमंग' ने उनके 'शब्दों में हलचल' मचाकर उनके भीतर काव्यात्मक ढाँचे में हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की विवशता पैदा की ।

हिंदी साहित्य के इतिहास की जीवंत प्रस्तुति के लिए कवयित्री बधाई की पात्र हैं । उनकी लेखनी में नैरंतर्य बना रहे और गुणवत्ता बढ़े- इन शुभकामनाओं के साथ.....

188, नेशनल मीडिया सेंटर
एन एच-8, गुड़गाँव-122002.
31 अगस्त, 2014.

डॉ. कुमुद शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-7

डॉ. कुमुद शर्मा के प्रति

सागर गहरी गहन सोच साहित्य सरोवर खिला कुमुद ।
नभ में अनगिन तारे चंदा चमके जग ज्योतिर्मुद ।।
हिंदी की सरताज अनोखी हैं कुमुद शर्मा ।
सोच समझ का जोड़-तोड़ नवल सर्व-धर्मा ।।
निजता का संस्पर्श 'आप' हैं सबसे न्यारी ।
सकारात्मक पथगामी शुचिता संयम फुलवारी ।।
'धन्य पुष्प' मुठ्ठीभर मेरे जगर-मगर अनुगुंजित ।
गंध सुगंधित महक खिले बगिया मन प्रमुदित ।।

शत-शत नमन

मामेकं शरणं

-डॉ० ज्ञानेंद्र माहेश्वरी

हिंदी	परिभाषित
साहित्य	परिवर्द्धित
का	प्रतिष्ठित
इतिहास	साहित्यिक
का	शुद्ध-बुद्ध
साहित्य	है
हिंदी	स्वरुप
भाषा	भाषा
स्वरुप	हिंदी
है	साहित्य
शुद्ध-बुद्ध	का
साहित्यिक	इतिहास
पल्लवित	का
परिनिष्ठित	साहित्य
परिमार्जित	हिंदी

—साई-ओशो

माहेश्वरी नगर
डिबाई-203393
(उत्तर प्रदेश)
भारत

धन्य पुष्प

ईश कृपा महिमा जगी उदय हुआ शुभ योग ।
मिला योग से योग लेखन ने पाया शुभ संयोग ।।
साहित्य सुधा अमृत बरसा कला रूचि मन जाग्रत ।
कृपा शारदा सुमति झरी ज्ञान कोष भर प्राकृत ।।
चिंतक शुभ साहित्यकार भरें प्रेरणा प्रियवर ।
पति डॉ० सुरेश चंद्र मौन भाव मन विद्वतवर ।।
पुत्री सदा उमंगित प्रगल्भित सकल चितेरी ।
सौ० अनुभा-डॉ० अनिल गड़ोड़िया दोनों संतानों संग प्रेरी ।।
डॉ० विभा बंसल-डॉ० सिद्धार्थ गौड़-पुत्री मानसी नयम विभोरी ।
डॉ० श्वेता बंसल-डॉ० अजय गर्ग-पुत्री शैरी स्वप्निल मन डोरी ।।
डॉ० जया बंसल विशेष सहयोगिन-पुत्र गौरांग वैभवी ।
डॉ० रूपम बाला संग मेरे प्रिय नाती-नातिन अधिक अनुभवी ।।
नातिन बड़ी ई० अमीषी-ई० रौनक जरीवाला प्राण प्रिय बोली ।
संग नाती वैभव अनंत गड़ोड़िया प्रतिभा बल रंगोली ।।
करूँ समर्पण धन्य पुष्प रचना हिंदी इतिहास यशे ।
बने प्रदर्शक सभी प्रियजन नित-प्रति भाव बसे ।।
पठनीय - संचनीय - गुणवती पुस्तक साजे ।
शोधार्थी - बुद्धिजीवी - अध्ययन - चिंतन जागे ।।
अनुराग प्रिय डॉ० ज्ञानेंद्र माहेश्वरी सुधी ।
कर्मशील-विद्वता सुधार कृति करी प्रभी ।।
अनेकशः धन्य पुष्प चिरजीवी प्रबुद्ध ।
यश-गंगा-जल बहे प्रखर मन-तन शुद्ध ।।
प्रेरणा - स्रोत ज्ञान ज्ञानेंद्री ज्ञानेंद्र ।
सहयोग सहज सुगठित सप्रबेंद्र ।।

'रजनी सिंह'

भाव भरे मन में अकुलाए

मन उमंग तन तरंग शब्दों में हलचल जागी ।
हिंदी भाषा साहित्य सरोवर कथा पुरातन पागी ।।
वंदनीय आचार्य रामचंद्र शुक्ल प्रगल्भ हिंदी ।
अथक परिश्रम प्रतिभा मंथन हुई इतिहास प्रसिद्धी ।।
लिखा 'हिंदी साहित्य इतिहास' संवत् उन्नीस सौ छियासी ।
हजार वर्ष इतिहास समेटा परिवर्तन दिव्यासी ।।
गागर में सागर भर दिया पुस्तक एक बनाय ।
साहित्यकार हिंदी समृद्ध किए नाम परिचाय ।।
मुगल वंश का आगमन हिंदी भाष्य विध्वंस ।
अपने वश में कर लिया जोर जबर बलवंस ।।
हिंदू बोल हुए सब मौन देख म्यान तलवारों की ।
मार-काट रक्त संहार मुगलवंश गद्दारों की ।।
मिला सेर को सवासेर इंग्लैंड तलक भनक फैली ।
मौकापरस्त गोरों की चालें हिंदुस्तान फलक रैली ।।
हिंदी रंगी मैल मिट्टी में रूप बदलकर सिमटा ।
अंग्रेजी-उर्दू भाषा का मिश्रण उसपर चिपटा ।।
बुद्धिमानी संकल्पी लेखक हिंदूजन जब जागे ।
देख खोखली साहित्य पोथी त्रस्त भाव भागे ।।
खोज मचाते भाव जगाते बिगुल एकता बजा दिया ।
एकत्रित हो दृढ़-संकल्पी हिंदी युग भी सजा दिया ।।
कविता-कहानी-उपन्यास-निबंध रचे अनूप अलौकिक ।
धूममची जागे नवयुवक मातृभाषा अंतस् मौलिक ।।

गीता-रामायण पुराण वेदों में खोजी संस्कृति ।
अपनी भाषा प्राणदायिनी शब्द संचिता परिष्कृति ।।
जगी चेतना शक्ति मचल गए उर्दू-अंग्रेजी भाषी ।
युद्ध विरूद्ध क्रुद्ध वाक् संगति समझौता आषी ।।
शिरोमणी साहित्य-जगत् हिंदी भाषी लेखक जागे ।
भाव लिखें समग्र समन्वय एकजुट प्रेषक लागे ।।
बोल-चाल की भाषा जन-गन देसी भाष्य खड़ी बोली ।
भारतेंदु ने भरी समृद्धि हिंदी खड़ी बोली डोली ।।
हुए धुरंधर साहित्य-सेवी रच डाला साहित्य समंदर ।
व्याकरण-समास-अनुप्रास मढ़े सुगढ़ महत्तर ।।
हैं कृतज्ञ हम गुणग्राही रचनाकारी वीरों के ।
सहकर विघ्न सहेजे चिंतक मातृभाष्य हीरों के ।।
स्वतंत्रता की सुखद बयार तमस ताप हरती आई ।
शब्द-शब्द कनक मढ़ सुख-सुहाग भरती लाई ।।
शुद्ध पर्यावरण शुद्ध सोच मन भाव जगे नभ में ।
दबी गढ़ी भाव पोटली बिखरी गंधित जन में ।।
अमर रहे अक्षुण्ण राष्ट्रभाषा अंतरिक्ष महके ।
हिंदी भारत भाल दमक श्रृंगार भाग्य चहके ।।

-रजनी सिंह
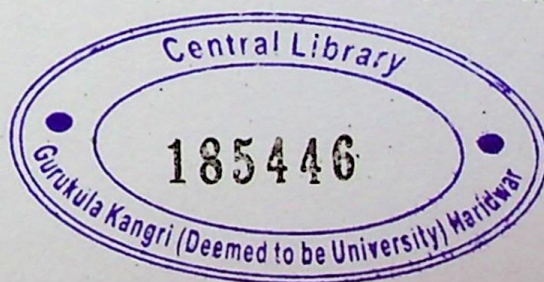
नमन करूँ शत बार

अभिव्यंजना

हिंदी मातृभाषा बोली मेरी
मीठी मिश्री शहद रस घोली ।
भारत की संतान हैं हम
भाषा अनेक पर हिंदी बोली ।।

भाषा है अनमोल रागिनी
हिंदी मातृभाषा मिश्री ।
मुख से नि:सृत पावन धारा
मेरी बोली ईशश्री ।।

मन की बातें सुनें सुनाएँ
बोलें हिंदी में हमजोली ।
प्रेम-नेह गरमाहट आँचल
माँ-समान हिंदी अनमोली ।।

इसीलिए मन उमंग जगी
गाऊँ महिमा गुणगान करूँ ।
गद्य पढ़ा इतिहास हिंदी का
पद्य रूप अभिव्यक्त करूँ ।।

आचार्य प्रवर रामचंद्र शुक्ल

पहले शब्द तंदुल चढ़ाऊँ
रामचंद्र शुक्ल शिरोमणि को ।
श्रम-वेदी पर चढ़ा चाव
हिंदी इतिहास लेखनी को ।।

करबद्ध-नमन वंदन-अभिनंदन
पूज्य श्री रामचंद्र शुक्ल ।
अथक परिश्रम से लिख डाला
'हिंदी साहित्य इतिहास' फुल्ल ।।

युग-युग तक बहुमूल्य शास्त्र
शिक्षार्थी - ज्ञानार्थी पाएँगे ।
लाभांवित होंगे प्रसन्न फिर
'धन्यवाद' धुन गाएँगे ।।

आदिकाल

प्रकरण-१

सामान्य परिचय

स्व - भाषा स्व - शब्द ।
जिए - मरे स्व - व्यक्त ।।

राष्ट्र-ध्येय ज्ञानीजन जाने ।
प्राण-सर्ग स्वाभिमान पहचाने ।।

हिंदी प्राणों की बलिहारी ।
भारत की पहचान दुलारी ।।

अभिव्यक्ति माधुर्य - भरी ।
कोमल भावों सजी - धरी ।।

है इतिहास आदि-सृष्टि का ।
पर मैं कहूँ 'हजार' सदी का ।।

लुटा-पिटा दुष्टों के कृत पर ।
पर है शान अमर उजागर ।।

हिंदी है जीवन - पतवार ।
उतरे भारतीय हो सवार ।।

प्रतिभावान्

रचनाकार अनेक विलक्षण ।
प्रतिभा प्रगट करी सब गुण ।।

मिश्रबंधु-रामचंद्र शुक्ल ।
श्यामसुंदर-नगेंद्र प्रफुल्ल ।।

मन-हुलास कलम-उजास ।
राष्ट्रभाषा सम्मान आस ।।

जीवन-धन उत्कर्ष मनस्वी ।
भाषा हिंदी बने यशस्वी ।।

संचित सुलभ खोज सभी ।
लिख डाला इतिहास तभी ।।

गद्य-कला से जड़ा-गढ़ा ।
'हिंदी साहित्य इतिहास' पढ़ा ।।

हृदय-हुलास

तन-मन सिहरन उमगी ।
प्रेमभरी हिंदी ठुमगी ।।

सभी रहे श्रमसाध्य नेमी ।
विश्व बने स्वभाषा प्रेमी ।।

हिंदी है सिंधु से जगी ।
शीतल-जल सरिता पगी ।।

आदिकाल से ठुमक-ठुमक ।
मोह रही मन पुलक-पुलक ।।

बात करूँ मुस्काती ये ।
मुझे प्रेमिका भाती ये ।।

शब्द-वर्ण मोहें मन मेरा ।
नव उल्लास पसारें घेरा ।।

हाथ पकड़ संवाद करें ।
अंतस् मन रस-रास करें ।।

चहकती हिंदी

मन उपवन खिल उठी कली ।
काव्य-ज्योति इतिहास पली ।।

लिखूँ सहस्र खोज़ी इतिहास ।
जन-जन लाभांवित प्रतिभास ।।

केवल रहे न साक्ष्य मात्र ।
संस्कृति-समाज-राजनीति पात्र ।।

ज्ञानगम्य गणनायक बन ।
शोध - तथ्य स्थायित्वपन ।।

नामकरण शुभ कर्म-काल ।
आदिकाल नाम वीरगाथा काल ।।

हजार पचास संवत् चले ।
तेरह सौ पचहत्तर रचे-पले ।।

बोल-चाल की भाषा-न्यारी ।
अपभ्रंशों ने खूब सँवारी ।।

साहित्यिक पुस्तक निकलीं ।
संख्या चार प्राप्त कर लीं ।।

विजयपाल रासो हम्मीर ।
कीर्तिलता-कीर्तिपताका गंभीर ।।

काव्य गढ़ा राष्ट्रभाषामय ।
आठ पुस्तकें सुलभमय ।।

खुमान रासो-बीसलदेव रासो ।
जयमयंक परमाल रासो ।।

पृथ्वीराज जयचंद प्रकाश ।
खुसरो पहेलियाँ भरें आश ।।

मुंज और भोज कविजनी ।
काव्य-कुशल महात्मनी ।।

कुछ ऐसे भी हुए धुरंधर ।
लिख डाला साहित्य समंदर ।।

समृद्धि-शुचिता चमक पड़ी ।
गैर जना नीयत बिगड़ी ।।

घुसने लगे भाँप संपदा ।
तुर्क भेदिए झगड़ा विपदा ।।

पर हिंदी यश-रथ चढ़ी ।
राजा भोज राज बढ़ी ।।

हम्मीर समय कुछ रूकावट ।
आदिकाल फिर फलावट ।।

अपभ्रंश भरी हिंदी मुस्काई ।
बोल-चाल गति खूब बढ़ाई ।।

नाम पड़ गया देशी भाषा ।
वर्तमान तक महक सुभाषा ।।

एक उदाहरण देखो वीर ।
'चलिअ वीर हम्मीर ।।

पाअभर मेइणि कंपइ' ।
वर्णन जोश अधिक भरइ ।।

प्रकरण-२
अपभ्रंश काव्य
सामान्य परिचय

भाषा ने अब बदली चाल ।
भरतमुनि ने किया कमाल ।।
'अपभ्रंश' शब्द अरूचिकर ।
'देशभाषा' कहा सुमतिकर ।।
प्रेम जगा भाषा महकी ।
सुलह सहज बन चहकी ।।
बौद्ध जैन औ तांत्रिक सिद्धी ।
अपनी ढपली अपनी रिद्धी ।।
गई गड़बड़ा निर्णय बृद्धी ।
मुगल चढ़ी विनाश गद्धी ।।
नालंदा - बिहार ज्ञानेंद्री ।
विक्रम शिला शिक्षा केंद्री ।।
तितर-बितर खिलजी किए ।
वैमनस्य मरुस्थल किए ।।
पात्र बने घृणित दोषमय ।
शर्म गँवाई दुष्ट सोचमय ।।
उसी बीच जनमे कापालिक ।
जोगी वेष ठगी साधिक ।।
चौरासी सिद्ध अगणित नाम ।
'पा' से अंतिम लगे विराम ।।
सरहपा - तिलोपा योगी ।
औरों को शिक्षा ढ़ोंगी ।।

रमे रंगेली पीवे मदिरा ।
नारी संग करे फकिरा ।।
सास बड़ी समझ समझावें ।
यौवन नारी समझ न पावें ।।
हुआ प्रवर्तन 'महासुखवाद' ।
बौद्धधर्म औ तांत्रिक वाद ।।
शक्ति-योगिनी नाम हवास ।
नारी संग बढ़ा सहवास ।।
दुराचार की चली बयार ।
आ धमका विदेशी रार ।।
मुसलमान भारत आगमन ।
अत्याचार बढ़ा कुशासन ।।
एक तरफ सिद्ध वज्रयान ।
योगी गोरखनाथ महान ।।
काम-कला विकृत रूप ।
उच्च लक्ष्य ईश्वर सरुप ।।
चौरासी सिद्धों की माया ।
नाथों की संख्या नौ काया ।।
संवत् नौ सौ है अनुमान ।
गोरख कथा 'रत्नाकर जोपम' जान ।।
संत ज्ञानदेव महाराष्ट्रीयन ।
शिष्य परंपरा अनुकरणीयन ।।
आदिनाथ मत्स्येंद्रनाथ ।
गोरखनाथ औ गैनीनाथ ।।

ज्ञानेश्वर औ निवृत्तिनाथ ।
बने जलंधर आदिनाथ ।।
शहर जालंधर पड़ा सुनाम ।
किए कार्य उत्तम शुभाम ।।
नाथ संप्रदाय में बालनाथ ।
मिलकर करे सुधार साथ ।।
खिचड़ी पकी देश में ऐसी ।
मुस्लिम गाते सूफी जैसी ।।
योगी सिद्ध गाएँ गुण अपने ।
झगड़ा हुआ दोनों में बढ़ने ।।
जोर जबरदस्ती से कर लीं ।
इस्लाम जड़ें ऐसे जम लीं ।।
ख्वाजा मुईनुद्दीन अजमेर में ।
मौका-परस्ती जिधर-किधर में ।।
गोरखनाथ विकल मनमारे ।
सामान्य-साधना योग सँवारे ।।
चित्त-शोधन हुआ प्रकरण ।
नाद-बिंदु जगत् उद्धरण ।।
निर्गुणपंथी करते शोधन ।
आत्मा-परमात्मा सम्मोहन ।।
जाति-पाँति घेरे में भटके ।
अपने मत विवेक पे अटके ।।
जोगी जैसी भाषा बानी ।
'सधुक्कड़ी' जानी-पहचानी ।।

'नाथपंथ' ने धाक जमाई ।
'सधुक्कड़ी' भाषा भरमाई ।।
'मुस्लिम' सुन चुंबक खिचाव ।
'काफिर बोध' जगा मन भाव ।।
विक्रम संवत् चौदह सौ ।
सृजन गद्य-पद्य दोनों ।।
सांप्रदायिक शिक्षा उमड़ी ।
गोरखनाथ पंथ गुणी ।।
काव्य-भाषा मिश्रित उभरी ।
हिंदी ब्रज पश्चिमी भरी ।।
काव्य-भाषा का चलन बढ़ा ।
सिद्ध 'सरह' प्राचीन मढ़ा ।।

हेमचंद्र :

हेमचंद्र आचार्य जैनधर्म ।
ग्रंथ व्याकरण बना कर्म ।।
'सिद्ध हेमचंद्र शब्दानुशासन' ।
दोहा पद्य किया नामकरन ।।

सोमप्रभसूरि :

लखी प्रसिद्धि जैन काव्य की ।
बने सोमप्रभसूरि पंडित भी ।।
'कुमारपालप्रतिबोध' काव्य ।
रचा संस्कृत श्लोक भाष्य ।।
अपभ्रंश दोहा खूब जमा ।
जैन धर्म मजबूत रमा ।।

जैनाचार्य मेरुतुंग :

'प्रबंध चिंतामणि' संस्कृत ग्रंथ ।
जैनाचार्य मेरुतुंग पंथ ।।
कृति 'भोजप्रबंध' बना आधार ।
संग्रह पौराणिक राजा सार ।।
मृणालवती प्रेम विरही ।
मुंज बना तैलप बंदी ।।
मुंज लिखे विरही दोहा ।
प्रेमगली संकरी मोहा ।।

विद्याधर :

विद्याधर कवि कन्नौज ।
'प्राकृत पिंगल सूत्र' खोज ।।

शार्ङ्गधर :

शार्ङ्गधर कविताएँ वीररस ।
शाबर मंत्र रचे प्रीत रस ।।
देशप्रेम भाषा चित्र-काव्य ।
लिए देशभाषा के वाक्य ।।
सुभाषित-संग्रह लिखे नेक ।
यत्र - तत्र - सर्वत्र अनेक ।।
'हम्मीर रासो' युद्ध गाथा ।
पद्य रचे वीर क्रुद्ध गाथा ।।
लिखा अनोखा युद्ध इतिहास ।
आदिकाल अद्‌भुत परिभास ।।
विद्यापति कवि भाषा ऐसी ।
'देशकाल' अपभ्रंशी जैसी ।।

वीरगाथा काल
(संवत् १०५०-१३७५)
प्रकरण-३
देशभाषा काव्य
सामान्य परिचय

जहाँ बसे धनाढ्य हिंदूजन ।
राज्य प्रतिष्ठित राजा जन ।।
बसें लुटेरे मुसलमान जहाँ ।
निरीह जनों लूटें दुख वहाँ ।।
हर्षवर्धन साम्राज्य उदार ।
समाप्त संवत् सात सौ चार ।।
चौहान - चंदेल - परिहार ।
गहरवार झगड़े निःसार ।।
हुआ उदय वीरोल्लास युग का ।
हिंदी साहित्य आगमन शुभ का ।।
वही गज़नवी महमूद मना ।
अवसर पा चालाक बना ।।
करता युद्ध अनेक बार ।
पर पाता हर-बार हार ।।
अजयदेव अजमेर संस्थापक ।
किए परास्त मुसलमान शासक ।।
म्लेच्छ रक्त-रंजित कीन्हे ।
मार भगा सबक दीन्हे ।।

'आनासागर' ताल बनाया ।
पुत्र 'अर्णो' के नाम धराया ।।
'अर्णो' पुत्र वीर बीसलदेव ।
नाम गूँजता गली प्रदेश ।।
मार भगाए मुस्लिम शासक ।
दिल्ली-झांसी बनी प्रशासक ।।
शासनकाल यशस्वी बन ।
गाई प्रशंसा मनस्वी जन ।।
अंतिम बार पराजय आई ।
मुगल-दहाड़ सहन नहीं पाई ।।
यशोगति प्राप्त फिर कीन्ही ।
पृथ्वीराज अमर गति लीन्ही ।।
गाते रहे शौर्य गाथाएँ ।
कवि साहित्य सृजन कर्त्ताएँ ।।
युद्ध-प्रेम का मेल काव्य में ।
श्रृंगार सौंदर्य रचा काव्य में ।।
श्रेष्ठ काव्य बने वीर गीत ।
'बीसलदेव रासो' धरोहर जीत ।।
साहित्यिक प्रबंध-ग्रंथ रूप ।
'पृथ्वीराज रासो' ग्रंथ अनूप ।।
'रासो' युग यश गायण ।
'रहस्य' भरा शब्द 'रसायण' ।।

खुमान रासो :

खुमान रासो अपूर्ण पर प्राप्त ।
'दलपति-विजय' रचना हुई ख्यात ।।

बीसलदेव रासो :

वीरगीत संपूर्ण सुव्यवस्थित ।
ग्रंथ प्रेम-विरह अनुपूरित ।।

चंदबरदाई :

चंदबरदाई प्रथम कविकार ।
हिंदी कविता सुगढ़ श्रृंगार ।।
ढाई हजार पृष्ठ से गुंजा ।
'पृथ्वीराज रासो' चंद पुंजा ।।
'पृथ्वीराज' पिता सोमेश्वर ।
पौत्र 'अर्णोराज' राजेश्वर ।।
माँ कमला पुत्री अनंगपाल ।
गोद लिए राजा दिल्लीवाल ।।
दिल्ली-अजमेर दो राज सजे ।
मौसेरा भाई जयचंद तजे ।।
कन्नौज राज जयचंद पुत्र ।
राजसूय यज्ञ किया स्वतंत्र ।।
पृथ्वीराज संग अन्य सुराज ।
किए निमंत्रित सादर साज ।।
हुए अनुपस्थित पृथ्वीराज ।
अन्य सभी पहुँचे वर ताज ।।
ईर्ष्या-वश जयचंद लगाई ।
पृथ्वीराज मूर्ति द्वार सजाई ।।
पुत्री संयोगिता प्रेम दीवानी ।
वरमाला मूर्ति पहिनानी ।।

निष्कासित पुत्री कर दीनी ।
जयचंद बैर भाव मन कीनी ।।
पुत्री विवश विकल हुई ।
गांधर्व विवाह कर प्रसन्न भई ।।
पृथ्वीराज-संयोगिता कथा ।
व्याप्त हुई यह प्रेम प्रथा ।।
सह न सका जयचंद विवाह ।
करी चढ़ाई सेना अधिकाह ।।
पृथ्वीराज वीर बलशाली ।
खदेड़ भगाई सेना जाली ।।
स्वर्णिम-काल पृथ्वीराज राज ।
नाना अनंगपाल समर्पित राज ।।
जन्म हुआ संवत् ग्यारह सौ पंद्रह ।
ग्यारह सौ बाईस गोद संग्रह ।।
ग्यारह सौ अट्ठावन युद्ध काल ।
शहाबुद्दीन विवादों भरा साल ।।
लिखा किसी ने था 'धोखा' ।
कुछ कल्पित कुछ ने 'चोखा' ।।
उल्लेख कवि 'चंद' दिया ।
'चंदबरदाई' संभवतः किया ।।

भट्टकेदार-मधुकर कवि :

पृथ्वीराज लिखा कीर्तिमान ।
'रासो' में चंद-भट्टकेदार गान ।।
भट्टकेदार लिखा महाकाव्य ।
'जयचंद-प्रकाश' प्रताप भाष्य ।।

मधुकर कवि भी भाव जगा ।
'जयमयंक जस चंद्रिका' रचा ।।

सिंघायच दयालदास :

'राठौडा री ख्यात' ग्रंथ वृतांत ।
बीकानेर राज-पुस्तक-भण्डार प्राप्त ।।
है सार्थक विवरण सब पेश ।
कन्नौज तक इतिहास शेष ।।

जगनिक :

बारह सौ तीस संवत् प्रसिद्ध ।
कालिंजर राजा परमार सिद्ध ।।
जगनिक भाट रचा एक काव्य ।
आल्हा-ऊदल (उदयसिंह) काव्य ।।
गाँव-गाँव में झूमें गावें ।
लोग-लुगाई जोश दिखावें ।।
आल्हा-ऊदल नाम अमर ।
हिंदी साहित्य झलै चँवर ।।

श्रीधर :

'रणमल्ल छंद' एक काव्य ।
राजा रणमल्ल जय गाव्य ।।

प्रकरण-४

फुटकल रचनाएँ

सामान्य परिचय

रचना पद्य वीरगाथा जग ।
बोलचाल भाषा पग-पग ।।
दिल्ली के खुसरो बतलाएँ ।
तिरहुत विद्यापति सुनाएँ ।।

खुसरो :

खुसरो बने प्रशंसक सबके ।
लिखे दोहे-पहेली तुक फंके ।।
फारसी ग्रंथ रचे कई सार ।
बृहद भाष्य बृहद् प्रचार ।।
मुकरी-पहेली गीत रसीले ।
ब्रजभाषा भर मधुर नुकीले ।।
जमी धाक घर-घर खुसरो ।
कबीरदास सम मन मुखरो ।।

विद्यापति :

विद्यापति भाषा मैथिली ।
रस-शृंगार-पद निर्मली ।।
राधा-कृष्ण महिमा अपार ।
बाल कुँज यमुना बिहार ।।
बहती रही काव्य-रस सरिता ।
जल बहता मंदगति भरिता ।।
संवत् चौदह सौ तक चला ।
वीरगाथाकाल भला ।।

पूर्व मध्यकाल
भक्तिकाल
(संवत् १३७५-१७००)
प्रकरण-१
सामान्य परिचय

देश घिरा अवसाद अंधेरा ।
लुटने लगी संस्कृति सुमेरा ।।
मुस्लिम राज्य निरंकुश शासन ।
अत्याचार हिंसा दु:शासन ।।
धर्म-विनाश विद्वान त्रास ।
अपमान पुरुष हिंदुत्व ह्रास ।।
फैल गया साम्राज्य मुसलमाय ।
लड़ने लगे स्वतंत्र समुदाय ।।
छाई उदासी देख अव्यवस्था ।
हताश जाति ढूँढ़े सुख आस्था ।।
कर्म-ज्ञान औ भक्ति समागम ।
सिद्ध-कापालिक नष्ट-भ्रष्टतम ।।
धर्म-भावना मिटी जगत् से ।
मन विदीर्ण कर्म परत से ।।
कर्महीन ज्ञानदीन भक्ति शुन्य ।
निष्प्राण समस्त भारत पुन्य ।।
महाभारत-रामायण लुप्त ।
शुचित विचार भए सुप्त ।।
जोगी-सिद्धी मस्त मलंदर ।
रहस्य-गुह्य सिद्ध कलंदर ।।

बाह्य जगत् फैलावें भटकन ।
नाथ-पंथ मोड़ कर वंदन ।।
विद्वन्मंडली हुआ विकास ।
ज्ञान-गुरू जागे भर साँस ।।
भक्ति मार्ग सिद्धांत सुवास ।
उमड़ा नूतन जन प्रकास ।।

रामानुजाचार्य :

उद्भव हुआ रामानुजाचार्य गुरू ।
संवत् एक हजार तिहत्तर शुरू ।।
सगुण-भक्ति का किया उदय ।
जनता हर्षित पथ गमय ।।
स्वामी मध्वाचार्य द्वैतवादी ।
वैष्णव संप्रदाय कृष्णवादी ।।
कालदर्शी कवि जगी भावना ।
जन-मन परिवर्तन साधना ।।
हिंदु जागे जगे मुसलमान ।
त्याग भेद जागे मन गान ।।
बढ़ने लगा भक्ति - संसार ।
खुशियों झूमा जनाधार ।।
जयदेव जगे पूर्वी भाग ।
मिथिला से विद्यापति राग ।।
उत्तर भारत से रामानंद ।
बल्लभाचार्य कृष्ण आनंद ।।
संवत् तेरह सौ अट्ठाईस ।
महाराष्ट्र भक्त नामदेव ईस ।।

'निर्गुण पंथ' चलाया कबीर ।
अंतस्साधना प्रेम अबीर ।।
साध चले नानक-दादू संत ।
मलूकदास साधक महंत ।।
सूफी संत प्रेम तत्व ग्राहक ।
विलासिता पूर्णत्व प्रवाहक ।।
नामदेव कवि गुण साधक ।
हिंदी कविता के संवाहक ।।
सगुणोपासना - निर्गुणोपासना ।
दोनों सत्य समग्र उपासना ।।
ज्ञान देव की ज्योति जली ।
परम सुधी मुनि उज्ज्वली ।।
भेद बताते ज्ञान गुणाकर ।
मत भटको ईश दिवाकर ।।
निर्गुण-सगुण भक्ति धारा ।
पंद्रहवीं संवत् चली उदारा ।।
निर्गुण विभक्त दो शाखा ।
ज्ञान एक दूजी प्रेम शाखा ।।
संत महात्मा उपदेश उच्चार ।
जनता हर्षित पा उपकार ।।
त्याग आडंबर अपनाए हजार ।
शुद्ध आचरण भर मनुहार ।।
आत्म-गौरव का हुआ संचार ।
रचने लगा इतिहास अपार ।।

काव्य-कहानी माध्यम धर ।
हिंदी भाषा प्रसन्न वर ।।
तोरण बंधन बँधे सुभाषित ।
सुगंध-मधुर-मुस्कान प्रवाहित ।।
'ईश्वरदास' ग्रंथ अवधी ।
ठेठ भाषा चौपाई सधी ।।
कुल रचे दोहा अट्ठावन ।
प्रेम प्रबंध रहस्यमय भावन ।।
'जायसी' काव्य क्षेत्र रत्नाकर ।
प्रसिद्ध हुए 'पद्मावत' रचाकर ।।
तुलसीदास अति बुद्धि शुद्ध ।
'रामचरितमानस' ग्रंथ समृद्ध ।।

प्रकरण-२
निर्गुण धारा
ज्ञानाश्रयी शाखा

कबीर :

कबीर जन्म चौदह सौ छप्पन ।
हिंदू प्रवृति भक्ति लक्षन ।।
शिष्य बने रामानंद स्वामी ।
त्याग समर्पण प्रेम अनुगामी ।।
'राम-राम कह' पैर पड़ा ।
रामानंद कबीर जकड़ा ।।
रामानंद - भक्ति सुमार्गी ।
शिष्य-परंपरा उदार मार्गी ।।
कबीरदास ज्ञानाश्रयी प्रवर्तक ।
निर्गणधारा राम समर्थक ।।

रैदास या रविदास :

'रैदास' समकक्ष उद्धारक ।
धन्ना-मीरा बने उपासक ।।
'पद' रच नाम अमर करना ।
ध्येय प्रेम-प्रण मन धरना ।।

धर्मदास :

'धर्मदास' संत कबीर जैसे ।
संत-प्रकृति जन्म-गुण वैसे ।।
घर-परिवार त्याग ममता ।
'काव्य' रचे भक्ति समता ।।

गुरुनानक :

आदिगुरु हुए सिख संप्रदाय ।
'निर्गुण संतमत' दिया चलाय ।।
मुसलमान-हिंदू बने समर्थक ।
दोनों को भाया निर्गुण अर्थक ।।
'ग्रंथ साहब' पंजाबी भाषा ।
भक्त या विनय सीधी-सी भाषा ।।

दादूदयाल :

'दादूदयाल' कबीर अनुयायी ।
'दादूपंथ' मारवाड़ चलायी ।।
प्रसिद्ध हुए साखी-दोहे लिख ।
निराकर-निरंजन धारी सिख ।।

सुंदरदास :

'सुंदरदास' बनिए खंडेलवाल ।
जयपुर जन्म मृत्यु सौलह सौ साठ ।।
पाई उपाधी संत और कवि ।
विनोद उक्ति पद गान छवि ।।

मलूकदास :

'मलूकदास' सैंकड़ा के ऊपर ।
जीवन अजूबा बना चमककर ।।
दिव्य-शक्ति आत्म-साक्षात्कार ।
जहाज बचाना स्वयं चमत्कार ।।
किया शगूबा रूपयों का ।
गंगाजी में भक्ति मति का ।।

रत्नखान - ज्ञानबोध पुस्तकें ।
निर्गणमार्गी संत समर्थकें ।।
खड़ी बोली रचना गुणभाषी ।
कवित्त-छंद-पद विन्यास राशी ।।

अक्षर अनन्य :

'अक्षर अनन्य' सत्रह सौ दस ।
योगी वेदांती दतिया कायस्थ ।।
विस्तृत ज्ञान शिष्य छत्रसाल ।
हाजिर-ज़वाब विरक्त जग-जाल ।।

प्रकरण-३
निर्गुण धारा
प्रेमाश्रयी (सूफी) शाखा

कुतबन :

शिष्य 'बुरहान' चिश्ती वंश ।
'कुतबन' रचा 'मृगावती ग्रंथ ।।
प्रेमकथा राजा गणपति सुकृति ।
सूफी शैली मृगावती-कुँवर कृति ।।

मंझन :

'मंझन' कवि कोमल सुकुमार ।
शैली सूफी आह्वान प्रेम-पुकार ।।
आध्यात्मिक अनुराग काव्य ।
मधुमालती-राजकुमार भाव्य ।।
अति-जटिल लंबी घटना भर ।
रचा दृश्य प्रकृति औ कल्पना कर ।।

मलिक मुहम्मद जायसी :

मलिक मुहम्मद जायसी सूफी कवि फकीर ।
जन्म कहावत स्वयं रची 'आखिरी कलाम' लकीर ।।
'भा अवतार मोर नौ सदी ।
तीस बरस ऊपर कवि बदी' ।।
'पद्मावत' में भरा प्रेम विरही उन्माद ।
सूआ से पा भेद पद्मिनी करे संवाद ।।
रतनसेन चित्तौड़पति सुन रूप पद्मिनी विचलित ।
कैसे पाऊँ अतुल सुंदरी हुए अधीर चित ।।

जोगी वेश धरा मंदिर में जा बैठे ।
शिव-पूजन मंदिर पद्मिनी चूक बैठे ।।
समाचार पा करी चढ़ाई पद्मिनी पाई ।
पर विपदा कुछ समय सेना अलाउद्दीन चढ़ाई ।।
रतनसेन चित्तौड़राज अलाउद्दीन हराई ।
मरा रतनसेन युद्ध-क्षेत्र पद्मिनी चिता समाई ।।
रची जायसी शैली मसनवी वीर शृंगार भरी ।
अलंकार-योजित लोकोत्तर-भावना करी ।।

उसमान :

'उसमान' शिष्य हाजी बाबा ।
'जहाँगीर' यश खूब दिखाबा ।।
सुभाव जायसी शब्द गुनाना ।
कल्पकथा कह काव्य सुझाना ।।

शेखनबी :

शेखनबी 'मऊ' जिला जौनपुर ।
'ज्ञानदीप' आख्यान काव्य-सुर ।।
राजा 'ज्ञानदीप' 'देवजानी' कहानी ।
कथा प्रेम सूफी शैली बखानी ।।

कासिमशाह :

कासिमशाह 'बाराबंकी' निवासी ।
'हंस जवाहिर' कथा सुहासी ।।
राजा हंस-रानी जवाहिर ।
रचना निम्न कोटि माहिर ।।

नूर मुहम्मद :

नूर मुहम्मद 'सबरहद' वासी ।
ससुराल आजमगढ़ हुए निवासी ।।
शमसुद्दीन श्वसुर जमाई घर ।
अस्सी उम्र जिए लिख कर ।।
कई विशेषता रहीं समाई ।
दोहे न रच बरवै - चौपाई ।।
फारसी में 'अनुराग बाँसुरी' ।
काव्य 'इंद्रावती' राजकुमारी ।।
संवत् अठारह सौ आते-आते ।
मुसलमान तोड़ते हिंदी नाते ।।
'उर्दू' भाषा विदेशी फारसी ।
अजमाते यद्यपि नहीं हस्ती ।।

प्रकरण-४

सगुण धारा

रामभक्ति शाखा

श्री रामानुजाचार्य जी :

शंकराचार्य अद्वैतवाद निरूपणकारी ।
'स्वामी रामानुजाचार्य' विशिष्टाद्वैतवादी ।।
राह सरल भक्तिमार्ग उद्धार प्रणाली ।
जनता आकर्षित समीप्य करा ली ।।
राघवानंद जी प्रधान आचार्य काशी ।
वैष्णव श्रीसंप्रदाय रक्षा आभासी ।।
अधिक अवस्था कारण सौंपा भार स्वामी ।
रामानंद प्रचार संभाला संप्रदायगामी ।।
इष्टदेव 'राम' मूलमंत्र राम ।
अनंतानंद-सुखानंद शिष्य नाम ।।
कबीर - सुरसुरानंद - नरहर्यानंद ।
पीपा - रैदास - सेन - धन्ना - भावानंद ।।
सुरसरी बारह पद्मावती ।
हुए शिष्य अन्य सुमती ।।

गोस्वामी तुलसीदास जी :

हिंदी साहित्य रसधार बही ।
रामभक्त तुलसीदास मही ।।
परमोज्ज्वल प्रकाश बिखरा ।
रामभक्ति हिंदी काव्य सुमरा ।।
संवत् पंद्रह सौ चौवन प्रकट भए ।
आयु सुखद सवा सौ वर्ष जिए ।।

'रामचरितमानस'-'विनयपात्रिका' ।
भक्ति उमंग छाई मन चित्रिका ।।
'कवितावली'-'गीतावली' पद ।
सर्वगुणात्मक-भक्तिभाव प्रद ।।
तुलसी यश कीरति फिर फैली ।
प्रौढ़ साहित्य सुरभिमय शैली ।।

स्वामी अग्रदास :

'स्वामी अग्रदास' रचीं कुछ पुस्तकें ।
'हितोपदेश उपरवाणाँ बावनी' दमकें ।।
'ध्यानमंजरी' में भरी कुंडलियाँ ।
'नाभादास' तुलसी एक चिढ़लियाँ ।।

नाभादास जी :

'नाभादास' वर्तमान सौलह सौ सत्तावन ।
साधुव्रती-भक्ति ब्रजभाषा रचन ।।
तुलसीदास देख आदर निज ।
गले लगा ग्रंथ 'भक्तमाल' लिख ।।

प्राणचंद चौहान :

'प्राणचंद चौहान' संस्कृत नाटक रचा ।
नई पद्धति उद्धृत रामायण नाटक सजा ।।

हृदयराम :

'हृदयराम' पंजाब पुत्र कृष्णदास ।
रामभक्ति 'हनुमन्नाटक' रचा प्रास ।।

रायमल्ल पांडे :

रचयिता 'हनुमच्चरित्र' भक्ति भरा ।
भक्ति प्रसाद आस-विश्वास उभरा ।।

रामचरणदास :

'रामचरणदास' चलाई 'स्वसुखी शाखा' ।
पति-पत्नि राम-सीता सज कल्पित ग्रंथ राखा ।।
'अमर रामायण'-'भुशुंडि रामायण'-'महारामायण' ।
'सखी भाव' राधा-चंद्रावली ग्रंथ पारायण ।।

जीवाराम :

'जीवाराम' नाम 'तत्सुखी' शाखा ।
'प्रमोदवन' स्थल चित्रकूट राखा ।।

प्रकरण–५
सगुण धारा
कृष्णभक्ति शाखा

श्री बल्लभाचार्य जी :

विक्रम पंद्रह–सोलह शताब्दी तक ।
'बल्लभाचार्य' हुए वैष्णव धर्म प्रवर्तक ।।
वेदशास्त्र ज्ञाता त्यागा वाद 'दार्शनिक' ।
अक्षर ब्रह्म सत्–चित् आनंदक ।।
'कृष्णाश्रय' 'प्रकरण ग्रंथ' विपरीत ।
वर्णन समय दशा मर्यादा वेद प्रीत ।।
'पुष्टिमार्ग' जन आस्था हितकर ।
'पर्यटन' शास्त्रार्थ अस्त्र तजकर ।।
प्रेम–गीत संगीत–ग्रंथ रचकर ।
उमगी गाथा जन–मन शुभकर ।।
नाम 'अंदाल' दक्षिण भक्तिन ।
कृष्ण समर्पण पद द्रविड़ लिखिन ।।
रहस्यवाद माधुर्य भावमय ।
कृष्ण मान पति यौवनमय ।।
'मीराबाई' – 'चैतन्य महाप्रभु' ।
सूफी मत गा कृष्ण स्वंभु ।।
'सूरदास' 'चौरासी वैष्णववार्ता' ।
खूब जमाई आनंदित प्रेमवार्ता ।।

सूरदास जी :

'सूरसागर' कृति 'सूरसारावली' ।
'साहित्य लहरी' वंश परंपरा खली ।।
'सूर' दृष्टि गिर-कूप गँवाई ।
छह दिन पर भक्ति ने जान बचाई ।।
सूर करी व्यापक पद-लीला ।
बाल-सुलभ श्रृंगार कृष्णलीला ।।
सर्वगुणी रस सिद्ध रसिक ।
'सूर' हिए गोविंद अधिक ।।

नंददास :

कवि गढ़िया 'नंददास' जड़िया ।
'अष्टछाप' नाम अमर बढ़िया ।।
'रास पंचाध्यायी' रोला छंदी ।
दो सौ फुटकल पद दो गद्य बंदी ।।

कृष्णदास :

कृष्णदास प्रधान मंदिर विट्ठलनाथ ।
रूठे कैद भए ड्योढ़ी पिटी साथ ।।
हुए प्रतिष्ठित कृष्ण भक्त बन ।
'भम्ररगीत'-'प्रेमतत्व निरूपण' गढ़न ।।

परमानंददास :

'परमानंद' लिखा 'परमानंद सागर' ।
आठ सौ पैंतीस पद धार गागर ।।

चतुर्भुजदास :

'चतुर्भुजदास' हुए गुरू भाई ।
तीन ग्रंथ रच साख जमाई ।।

छीतस्वामी :

'छीतस्वामी' पंडा मथुरा जजमान बीरबल ।
कृष्ण गुणानुवाद संवाद-गान प्रेमफल ।।

गोविंदस्वामी :

'गोविंदस्वामी' बहुस्वरमय गायक ।
'तानसेन' सुनन संगीत-साज आवक ।।

हितहरिवंश :

मथुरा के राधाबल्लभी संप्रदायी ।
स्वप्न दिखा सुन मंत्र 'राधा' धायी ।।
दिया चलाय पृथक संप्रदाय ।
'राधा सुधानिधि' श्लोक-संग्रह रचाय ।।

गदाधर भट्ट :

दक्षिण ब्राह्मण हुए प्रतिष्ठित ।
संस्कृत में ग्रंथ लिखे हित ।।
कविता में पारंगत उच्च बानी ।
भए शिष्य चैतन्य प्रभु जानी ।।

मीराबाई :

जन्म जोधपुर कृष्ण दिवानी ।
भोजराज संग विवाह प्रेम भक्तिानी ।।
भजन गाएँ-नाचें बीना मधुगानी ।
तन-मन सुधबुध बिसरा गरल पयानी ।।

'देवितुल्य' आदर कर गूँजी ।
गाथा मीरा - कृष्ण पूँजी ।।
'नरसी जी का मायरा' मीराग्रंथ ।
'गीत गोविंद टीका'-'राग गोविंद' ।।
'राग सोरठा के पद' सहित कुल चार ।
राजस्थान मिश्रित-ब्रजभाषा सार ।।

स्वामी हरिदास :

स्वामी हरिदास महात्मा संस्थापक ।
निंबार्क मतांतर्गत ठट्टी संप्रदायक ।।
तानसेन ने सम्मान किया गुरूवत् ।
अकबर साधुवेश गए श्रोतावत् ।।
गान मधुर पर कठिन राग पद ।
रचे ग्रंथ 'स्वामी हरिदास के पद' ।।

सूरदास मदनमोहन :

रहे अमीन राज अकबर ।
फक्कड़ पर संत सेवकर ।।
निस्वार्थी परम दयालू ब्राह्मण ।
फुटकल पद लिखे सहज गण ।।

श्रीभट्ट :

श्रीभट्ट शिष्य केशव कश्मीरी ।
'युगल शतक' सौ पद रस खीरी ।।
'आदि बानी' पुस्तक राधा-कृष्णा ।
झलक पाय तन-मन हरषा ।।

व्यास जी :

ओरछा के हरिराम व्यास ।
'राजगुरू' ओरछा नरेश न्यास ।।
'रासपंचाध्यायी' कृति भक्तिभरी ।
कृष्ण राधामय विस्तृत करी ।।

रसखान :

रसखान दिल्ली सरदार पठान ।
कृष्ण-भक्त शिष्य विट्ठलनाथ ।।
देख गोपिका प्रेम रची 'प्रेम वाटिका' ।
हुई अनन्य अलौकिक प्रेमचंद्रिका ।।
कवित्त-सवैया प्रेम-श्रृंगार सज ।
मुखर सत्य हृदय-व्यंजन धज ।।

ध्रुवदास :

'ध्रुवदास' कवि वृंदावनवासी ।
छोट-मोटे ग्रंथ लिखे सुखरासी ।।
भारतवासी रहे कृतारथ ।
भक्तकवि लख त्याग सारथक ।।
उऋण न होंगे युग-युगवाद ।
साहित्य जगत् न रहे 'दुखवाद' ।।

प्रकरण-६

सगुण धारा

भक्तिकाल की फुटकल रचनाएँ

सामान्य परिचय

प्रवृत्ति-प्रवाह हुआ जनता का ।
परिस्थितिवश नैतिकता का ।।
अकबर-राज्य हुआ संस्थापित ।
नीति-उदार योग-संस्कारित ।।
दरबार गूँजा 'वाह-वाह' कर ।
सम्मान-पुरस्कार 'कविता' कर ।।
वीर- श्रृंगार-नीति कविताएँ ।
मढ़ीं तुलसी-सूर-गंग रहिमाएँ ।।

छीहल :

राजस्थानी कवि रचना कची ।
'पंचसहेली' पुस्तक रची ।।

लालचदास :

लालचदास रायबरेली हलवाई ।
'हरिचरित'-'भागवत दशम् स्कंध भाषा' ई ।।
अवधी से अनुवाद तराशा ।
फ्रांसीसी 'गार्सां द तासी' आशा ।।

कृपाराम :

दोहा में 'हिततरंगिणी' रची ।
बिहारी कवि सम काव्य सजी ।।

महापात्र नरहरि बंदीजन :

ग्रंथ लिखे दो अति प्रबल ।
'छप्पय नीति'-'रूक्मिणी मंगल' ।।

नरोत्तमदास :

नरोत्तमदास वासी सीतापुर ।
'सुदामाचरित्र' ग्रंथ सवैया सुर ।।
'ध्रुवचरित' भी रचा खंडकाव्य ।
भाषा परिमार्जित भर भाव्य ।।

आलम :

'आलम' मुसलमान कवि भए ।
'माधवानल कामकंदला' ग्रंथ दए ।।

महाराज टोडरमल :

शेरशाह प्रिय अकबर मंत्री ।
सूबेदार बंगाल चुने संत्री ।।
नीतिपरक-कवित्त पद्यावली ।
फुटकल इधर-उधर सद्यावली ।।

महाराज बीरबल :

नारनौल जनमे बीरबल ।
असल नाम महेशदास ढल ।।
अकबर दरबार नौ रतन ।
बीरबल चतुर चिंतन ।।

गंग :

गंग कवि अकबर दरबारी ।
रहीम खानखाना प्रियधारी ।।
एक छप्पय पर छत्तीस लाख ।
दिए खानखाना नरकाव्य साख ।।

मनोहर कवि :

'मनोहर कवि' कछवाहे सरदार ।
'शत प्रश्नोत्तरी' रची संवार ।।
फारसीपन के छींटे मार ।
फुटकल दोहे नीति- श्रृंगार ।।

बलभद्र मिश्र :

ओरछा के सनाढ्य ब्राह्मण ।
'नखशिख' श्रृंगार प्रसिद्ध गण ।।
'गोपाल कवि' टीका लिख दी ।
'दूषण विचार' काव्य-ग्रंथ भी ।।

जमाल :

सहृदय - मुसलमान कवी ।
दोहा - पहेली रच यशस्वी ।।

केशवदास :

केशवदास साहित्य शास्त्रज्ञ ।
संस्कृत - पंडित काव्य मरमज्ञ ।।
सात-ग्रंथ 'कविप्रिया'-'रामचंद्रिका' ।
'रसिकप्रिया'-'जहाँगीर जसचंद्रिका' ।।
'वीरसिंह देवचरित'-'रतन बावनी' ।
'विज्ञानगीता' काव्य कुमुदनी ।।

होलराय :

जमीन पाई अकबर बादशाह ।
गाँव 'होलपुर' दिया बसाह ।।

रहीम (अब्दुर्रहीम खानखाना) :

बैरम खाँ अभिभावक अकबर ।
पुत्र रहीम मर्मज्ञ कवि जनकर ।।
दानवीर पर कर्ण संवाहक ।
दीन-हीन पर सदा सहायक ।।
याचक कभी न वापिस लौटा ।
मनवांछित फल दिया सुगौटा ।।
साहित्य-शिरोमणि तुलसी से ।
हिंदी - संस्कृत - फारसी से ।।
भारतीय प्रेम-जीवन तलक ।
खूब मनोहर सत्य झलक ।।
'रहीम रत्नावली' संग्रह निकाला ।
पं० मायाशंकर याज्ञिक बना डाला ।।

कादिर :

फुटकर - कवित्त रचयिता ।
कभी न पुस्तक में कविता ।।

मुबारक :

संवत् सौलह सौ चालीस ।
अच्छे पंडित सहृदय कवीस ।।

बनारसीदास :

जैन जौहरी पिता खड्गसेन ।
शैली पुष्ट युवा कुष्ट धर्म जैन ।।

सेनापति :

गंगावासी अनूपशहर ब्राह्मण ।
पिता गंगाधर गुरू हीरामण ।।

पद-विन्यास ललित ऋतुवर्णन ।
कर ना पाए अन्य कविजन ।।
रामभक्ति उद्गार अनूठे ।
करतार करम करि-करि रूठे ।।

पुहकर कवि :

जहाँगीर युग गुजरात कायस्थ ।
'रसरतन' दोहा-चौपाई ग्रंथ ।।
संयोग-वियोग प्रेमकथा दरशाई ।
रंभावती-सूरसेन गाथा गाई ।।

सुंदर :

गाएँ कविता गाएँ-सुनाएँ ।
शाहजहाँ दरबार भरमाएँ ।।
नायिका-भेद 'सुंदर श्रृंगार' रचा ।
मान 'कविराय' बादशाह जचा ।।

लालचंद या लक्षोदय :

डूँगरसी के पुत्र मेवाड़ी ।
प्रबंध काव्य 'पद्मिनी चरित्र' जड़ी ।।
रत्नसेन पद्मिनी कथा ।
राजस्थानी भाषा व्यथा ।।
जायसी से कुछ पृथक करा ।
जिद से पद्मिनी पराक्रम भरा ।।
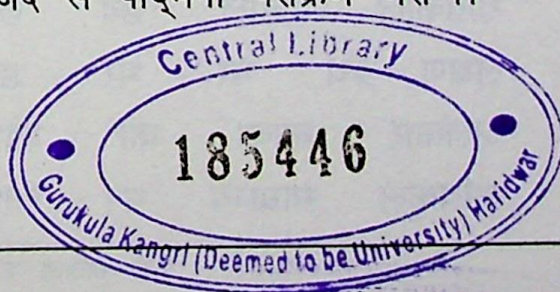
उत्तर मध्यकाल
रीतिकाल
(संवत् १७००-१९००)
प्रकरण-१
सामान्य परिचय

पूर्ण प्रौढ़ता हुआ समुच्चय ।
'हिंदी साहित्य इतिहास' उच्चय ।।
कृपाराम - मोहनलाल मिश्र ।
नरहरि कवि - करनेस जिक्र ।।
श्रृंगार - ग्रंथ अलंकार निरूपण ।
केशवदास शास्त्रीय विरूपण ।।
सम्यक् समावेश कवि कीन्हा ।
काव्य-रीति अद्भुत रूख दीन्हा ।।
केशवदास चमत्कारी कवि ।
संस्कृत - साहित्य मीमांसा छवि ।।
अलंकार ग्रंथ 'चंद्रालोक'-'कुवलयानंद' ।
संक्षिप्त उद्धरणी हिंदी में संस्कृतंद ।।
रीतिकाल परंपरा प्रारंभ ।
'चिंतामणि त्रिपाठी' आरंभ ।।
रीतिकाल पिंगल छंद छाँटे ।
लक्षण - ग्रंथ भर - भर डाटे ।।
अलंकार काव्य की शोभा ।
कविकुल साम्राज्य मन लोभा ।।

पर विपदा ना हुए आचार्य ।
श्रव्य – दृश्य निर्भर हियहार्य ।।
'भूषण' रचा अलंकार 'भाविक' ।
संस्कृत – ग्रंथ अर्थ शाब्दिक ।।
अर्थ भेद केवल अभिमत ।
संस्कृत काव्य – ग्रंथ दृष्टिगत ।।
कविजन भाषा किया विभाजन ।
क्षेत्र दशा से जगा निरापन ।।
ब्रज में सूर रचें ब्रजभाषा ।
अवधी में तुलसी जनभाषा ।।

प्रकरण-२

रीति ग्रंथकार कवि

सामान्य परिचय

रीतिकाल सामान्य-प्रवृति संग ।
मुख्य-मुख्य कवि भरी उमंग ।।

चिंतामणि त्रिपाठी :

जन्मतिथि सौलह सौ छासठ ।
'कविकुल कल्पतरू' ग्रंथ पठ ।।
'काव्य विवेक'-'काव्य प्रकाश' ।
'रामायण' ग्रंथ पाँच तराश ।।

बेनी :

फुटकल कवित्त ग्रंथ न कोई ।
नख-शिख षट् ऋतु पुस्तक पोई ।।

महाराज जसवंत सिंह :

महाराज प्रसिद्ध मारवाड़ ।
हिंद नरेश प्रतापी लड़ाक ।।
औरंगजेब भयभीत किया ।
शाहजहाँ-युग युद्ध किया ।।
तत्व - ज्ञान संपन्न सरूप ।
साहित्य - मर्मज्ञ जस रूप ।।

बिहारीलाल :

ग्वालियर पास जनमे बसुवा ।
तरूण भए ससुराल मथुरा ।।
जयपुर महाराज मतिभ्रम ।
प्रेमपाश भगाया मन-भ्रम ।।

मान बढ़ा सम्मान मिला ।
महाराज से अशरफी दिला ।।
कीर्ति-स्तंभ 'बिहारी सतसई' ।
सात सौ दोहों से जड़दई ।।

मंडन :

बुंदेलखण्ड रचना फुटकल ।
पाँच ग्रंथ भावुक मन-बल ।।

मतिराम :

'रसराज'-'ललितललाम' ग्रंथ ।
'साहित्यसार'-'लक्षणश्रृंगार' लयवृंद ।।

भूषण :

काव्य-जगत् सिरमौर सजे ।
वीर रसिक-जन भोर भजे ।।

कुलपति मिश्र :

आगरा वासी माथुर चौबे थे ।
'रस रहस्य'-साहित्य शास्त्री थे ।।

सुखदेव मिश्र :

दौलतपुर में वंश - बेल है ।
ब्रह्मज्ञान से 'अध्यात्म प्रकाश' है ।।
'कविराज' उपाधि हुए प्रौढ़ कवि ।
'फाजिल-अली-प्रकाश'-'रसार्णव' दी छवि ।।

कालिदास त्रिवेदी :

'अंतर्वेद' वासी कान्यकुब्ज ब्राह्मण ।
'कालिदास हजारा'-'वर-वधू-विनोद' ण ।।

'जँजीराबंद' बत्तीस कवित्त पुस्तक प्रमोद ।
'राधा - माधव बुधमिलन - विनोद' ।।

राम :

'राम' कवि कविताएँ मनोहर ।
'हनुमान नाटक' सजा मनोरम ।।

नेवाज :

'शकुंतला नाटक' दोहा-चौपाई ।
सवैया छंद भाषा सौहाई ।।

देव :

'भावविलास' रचयिता ब्राह्मण ।
'अष्टयाम'-'भवानी विलास' जण ।।
आचार्यत्व - कवित्व दोनों समृद्ध ।
मौलिकत्व - स्निग्धत्व प्रबुद्ध ।।

श्रीधर या मुरलीधर :

कवित्तकाल है सत्रह सौ साठ ।
'जंगनामा'-'नायिका भेद'-'चित्रकाव्य' पाठ ।।

सूरति मिश्र :

'सूरति मिश्र' 'अलंकार माला' तरीका ।
'अमरचंद्रिका' काव्यलिखी टीका ।।

कवींद्र :

कवींद्र पुत्र कालिदास त्रिवेदी ।
'रसचंद्रोदय' ग्रंथ श्रृंगार वेदी ।।
'विनोदचंद्रिका' - 'जोगलीला' ।
भाषा - मधुर प्रसाद - प्रवीना ।।

श्रीपति :

रीति काव्य ग्रंथ 'काव्य सरोज' रचा ।
ओज-माधुर्य छह अन्य ग्रंथ जचा ।।

बीर :

कायस्थ श्रीवास्तव दिल्ली वासी ।
'कृष्णचंद्रिका' नायिका-भेद रासी ।।

कृष्ण कवि :

माथुर चौबे पुत्र बिहारी ।
'बिहारी सतसई' टीका रच डारी ।।

रसिक सुमति :

'अलंकार चंद्रोदय' पद्य रचना ।
'प्रत्यनीक' लक्षण-उदाहरण सजना ।।

गंजन :

गुजराती ब्राह्मण काशी बस ।
'कमरुद्दीन खाँ हुलास' ग्रंथ रस ।।

अली मुहिब खाँ (प्रीतम) :

हास्य कवि 'खटमल बाईसी' ।
शिष्ट हास्य मैदान प्रदर्शक छाई-सी ।।

दास (भिखारीदास) :

'दास' (भिखारीदास) नौ काव्य कृति ।
काव्यांग निरूपण में सर्व सम्मति ।।
बन न सके आचार्य उपाधिधारी ।
रची साहित्य दर्पण प्रसादवारी ।।

भूपति (राजगुरूदत्त सिंह) :

काव्य मर्मज्ञ 'सतसई' –'रसरत्नाकर' ।
'कंठाभूषण' दोहे रीतिभर ।।

तोषनिधि :

चतुर्भुज शुक्ल पुत्र श्रृंगवेरपुर ।
'सुधानिधि' रस-भाव भेद सुर ।।
'विनयशतक' – 'नख-शिख' खोज ।
सहृदय-निपुण कवि मनोज ।।

दलपतिराय और बंशीधर :

'अलंकार रत्नाकर' ग्रंथ समृद्ध ।
दंडी-संस्कृताचार्य मनन संबृद्ध ।।

सोमनाथ :

सोमनाथ 'रसपीयूषनिधि' रीतिकाव्य ।
तीन ग्रंथ नाटक सहित नीतिकाव्य ।।

रसलीन :

मुसलमान कवि हरदोई वासी ।
'अंग दर्पण'–'रस प्रबोध' रस रासी ।।

रघुनाथ :

काशीराज सभा कवि सोहा ।
'महाभारत' अनुवाद संग्रहालय जोहा ।।

दूलह :

पिता 'कवींद्र' पौत्र 'कालीदास' ।
'कविकुलकंठाभरण' पद्य पचासी रास ।।

कुमारमणिभट्ट :

रचयिता 'रसिकरसाल' ।
रीतिग्रंथ सवैया रसाल ।।

शंभुनाथ मिश्र :

शंभुनाथ कवि यश-प्रताप रचना ।
'रसतरंगिणी' ग्रंथ 'रसकल्लोल' बना ।।

शिवसहायदास :

'लोकोक्तिरस कौमुदी' रचा ।
'शिवचौपाई' ग्रंथ रूपमय जड़ा ।।

रूपसाहि :

'रूपसाहि' कायस्थ पन्ना दोहा जड़े ।
पिंगल अलंकार ग्रंथ 'रूपविलास' मढ़े ।।

ऋषिनाथ :

दोहा पुस्तक 'अलंकारमणि मंजरी' ।
कविता सुगढ़-सुहानी वृद्ध भए जरी ।।

बैरीसाल :

असनी के ब्रह्मभट्ट ग्रंथ भाषाभरण ।
अलंकार-ग्रंथ दोहे सरस जरण ।।

दत्त :

अलंकार सजी पुस्तक 'लालित्यलता' ।
कवि अच्छे जान पड़े कानपुर पता ।।

रतन कवि :

प्रशंसनीय 'फतेहभूषण' ग्रंथ अर्पण ।
राजा गढ़वाल नामित अन्य अलंकार दर्पण ।।

नाथ (हरिनाथ) :

'अलंकार दर्पण' छोटी कृतिका ।
उदाहरण सबके पद लक्षण प्रतिका ।।

मनीराम मिश्र :

दो पुस्तकें 'छंदछप्पनी'-'आनंदमंगल' ।
पद्य अनुवाद छंदशास्त्र ग्रंथ प्रबल ।।

चंदन :

शाहजहाँपुर बंदीजन रचयिता ग्रंथ तीन ।
'शृंगारसागर'-'काव्याभरण'-'कल्लोलतरंगिणी' कीन ।।

देवकीनंदन :

ग्रंथ 'शृंगार चरित्र'-'अवधूत भूषण' ।
अलंकारमय 'सरफराजचंद्रिका' सृजण ।।

महाराज रामसिंह :

नरवलगढ़ के राजा कविवर ।
तीन ग्रंथ रचित सब ही रूचिवर ।।

भान कवि :

भान कवि पुत्र राजा जोरावर सिंह ग्रंथ नवरस ।
'नरेंद्र भूषण' एक ग्रंथ वीर-शृंगार रस ।।

थान कवि :

थान कवि ग्रंथकार पिटारा भानमति का ।
'दलेल प्रकाश' ग्रंथ क्रमबद्ध हीन पर यति का ।।

बेनी बंदीजन :

उपहासात्मक पद्धति पर निंदा ।
'भड़ौवा संग्रह' हास्य रस जिंदा ।।

बेनी प्रबीन :

'नवरसतरंग' ग्रंथ मनोहर ।
ब्रजभाषा श्रृंगार मनोरम ।।

जसवंत सिंह द्वितीय :

'शालिहोत्र'-'श्रृंगार शिरोमणि' ग्रंथ ।
हिंदी-संस्कृत भाषा प्रेमी पर स्वतंत्र ।।

यशोदानंदन :

भावुक-हृदय कवि-मृदु कोमल-भाव ।
ग्रंथ 'बरवै नायिका भेद' रचित स्व-भाव ।।

करन कवि :

उत्तम कविता 'रस कल्लोल' ।
रीतिग्रंथ 'साहित्य रस' घोल ।।

गुरदीन पांडे :

अज्ञात! रचा कविप्रिया-शैली-ग्रंथ ।
'बागमनोहर' साहित्य-सर्वांग ग्रंथ ।।

ब्रह्मदत्त :

ब्राह्मण रचनाकार 'विद्वद्विलास' ।
प्रशंसनीय अलंकार ग्रंथ 'दीपप्रकाश' ।।

पद्माकर भट्ट :

अति विशिष्ट 'बिहारी' सम कवि ।
'कविराज शिरोमणि' पदवी पाई छवि ।।
'प्रबोध पचासा'-'गंगा लहरी'-'राम रसायन' ।
तैलंग ब्राह्मण वंदन राजा-राजन ।।

ग्वाल कवि :

ब्रजभाषा कवि मथुरा जनमे ।
'भक्त-भावना' रीति-ग्रंथ आठ रचे ।।

प्रताप साहि :

दरबारी कवि 'व्यंग्यार्थ कौमुदी' कृति ।
'काव्य विलास' ग्रंथ हुआ प्रसिद्ध अति ।।
नायिका भेद सरस स्निग्ध सरल गति ।
आचार्यत्व-कवित्व संयोग तरल मति ।।

रसिक गोविंद :

निंबार्क संप्रदाय शिष्य हरिव्यास ।
नौ ग्रंथों की रचना दोहामय आस ।।

प्रकरण-३
रीतिकाल के अन्य कवि
सामान्य परिचय

रीतिकाल के कुछ कवि लिखते फुटकल ।
श्रृंगार रस से करें अलंकृत रस-भाव-बल ।।
अधिकांश हुए श्रृंगारी कवि रचना शैली ।
घनानंद सर्वश्रेष्ठ रची मार्मिक पहेली ।।
रसखान - आलम - ठाकुर प्रेमोन्मत्त भरे ।
कथा प्रबंध कथानक काव्य खूब-खूब रचे ।।
नीतिपद्य - ज्ञानोपदेशक - भक्ति - प्रेम पद ।
युद्ध-दान वीरता रसग्रंथों में उमड़ पन ।।
रीवाँ - महाराज नाटक 'आनंदरघुनंदन' ।
पर गणेश कवि 'प्रद्युम्नविजय' प्रकृत न बन ।।

बनवारी :

ओजभरा व्यवहार न सह पाए अपमान ।
अमर सिंह को कहा गँवार इतिहास प्रमान ।।
चट मारी तलवार सलावत खान ।
गिरा भूमि पर तज डाले प्रान ।।

सबलसिंह चौहान :

'महाभारत' दोहा-चौपाई लिखी ।
कथा अति सुखद सुहाई दिखी ।।

वृंद :

गुरू हुए कृष्णगढ़ नरेश राजसिंह के ।
'श्रृंगार शिक्षा'-'भावपंचाशिका' नीति दोहे सज के ।।

छत्रसिंह कायस्थ :

'विजयमुक्तावली' प्रबंध काव्य ।
काव्य गुण यथेष्ट परिमाण भाव्य ।।

बैताल :

'बैताल' नीति कुंडलियाँ रचीं ।
सीधी-सादी बात ज्यों-की-त्यों कहीं ।।

आलम :

ब्राह्मण फिर मुसलमान कवि दिवाने ।
रंगरेजिन पर फिदा 'आलमकेलि' रिझाने ।।

गुरू गोविंदसिंह जी :

सिक्ख गुरू दसवें पराक्रमी ।
महाराज काव्य - ज्ञाता सद्गुणी ।।
आर्य-संस्कृति हिंदू रक्षक साधक ।
देवकथा भक्ति - भाव आराधक ।।
'सुनीति प्रकाश'-'प्रेम सुमार्ग'- 'चंडीचरित्र' ।
'सर्वलोह प्रकाश'-'बुद्धिसागर' ग्रंथ रचित ।।

श्रीधर या मुरलीधर :

कई पुस्तकें फुटकल कविता रची ।
'जंगनामा' ऐतिहासिक युद्ध-ग्रंथ सजी ।।

लाल कवि :

गोरे लाल पुरोहित नाम मऊ वासी ।
छत्रसाल महाराज 'छत्रप्रकाश' साजी ।।

घनआनंद :

'सुजान' वेश्या प्रेमी जीवन सुखदायी ।
धोखा खा बने वैष्णव निंबार्क संप्रदायी ।।

रसनिधि :

अच्छे कवि दतिया जमीदारी ।
'रतन हजारा' बिहारी अनुकरण रचडारी ।।

महाराज विश्वनाथ सिंह :

विद्यारसिक कवि सिद्धहस्त ।
रामोपासक ग्रंथ अनेक विषयग्रस्त ।।

भक्तवर नागरीदास जी :

शूरवीर बूँदी हाड़ा जैतसिंह मारा ।
विरक्ति गए वृंदावन त्याग सारा ।।
बल्लभाचार्य संग गढ़ी राधा कविता ।
कवयित्री उपपत्नी 'बणीठणी जी' सविता ।।

जोधराज :

'हम्मीर रासो' कविता ओज भरी ।
संवत् अठारह सौ पचहत्तर समय करी ।।

बख्शी हंसराज :

पन्ना राज्य मंत्री हरिकिशुन पूर्वज भए ।
'प्रेमसखी' नाम से माधुर्य काव्य रच गए ।।

जनकराज किशोरीरमण :

अयोध्या वैरागी भक्ति-ज्ञान कविता ।
राम - सीता श्रृंगार ऋतुबिहार सरिता ।।

अलबेली अलि :

शिष्य थे महात्मा 'वंशीअलि' ।
संस्कृत 'श्रीस्तोत्र' साक्ष्य सत्कवि ।।

चाचा हित वृंदावनदास :

गौड़ ब्राह्मण निवासी क्षेत्र पुष्कर ।
प्रसिद्ध सूरदास तरह एक लाख पद रचकर ।।

गिरधर कविराय :

संवत् अठारह सौ कविकाल ।
नीति कुंडली रच हुए निहाल ।।

भगवत रसिक :

भगवद्भजन मगन निर्लिप्त भाव ।
ठट्टी संप्रदाय पद्य रचे प्रेम-वैराग्य दाव ।।

श्री हठी जी :

साहित्य मर्मज्ञ - कला कुशल कवि ।
'राधा सुधा शतक' दोहे कवित्त-सवैया रचि ।।

गुमान मिश्र :

पद्यानुवाद नाना छंदों में नैषध काव्य किया ।
उत्तम श्रेणी कवि सरल मनोहर पद्य दिया ।।

सरजूराम पंडित :

कथा ग्रंथ 'जैमिनीपुराणभाषा' ।
राजाओं का वर्णन 'रामचरितमानस'-सा ।।

भगवंतराय खीची :

रामायण के सात कांड सुंदर बड़े ।
हनुमान प्रशंसा में पचास कवित्त जड़े ।।

सूदन :

पिता बसंत मथुरा के माथुर चौबे ।
'सुजान चरित' प्रबंध काव्य ख्यात हौबे ।।

हरनारायण :

दो कथात्मक-काव्य अनुप्रास अलंकृत ।
'माधवानल कामकंदला'-'बैताल पचीसी' कृत ।।

ब्रजवासीदास :

बल्लभ संप्रदाय 'ब्रजविलास' ब्रजभाष्य ।
'प्रबोध चंद्रोदय' नाटक अनुवाद साज्य ।।

गोकुलनाथ, गोपीनाथ और मणिदेव :

तीनों ने मिल दिया हिंदी साहित्य उजास ।
'महाभारत'-'हरिवंश' मनोहर अनुवाद सास ।।

बोधा :

वेश्या प्रेम-विरह पद्य रचे रसिक ।
'विरहवारीश' पुस्तक रची कवित ।।

रामचंद्र :

पार्वती रूचिकर वर्णन अकथ अलौकिक ।
चरणार्बिंद सुषमा शक्ति शांति द्योतिक ।।

मंचित :

कृष्णचरित कृति 'सुरभी-दानलीला'-'कृष्णायन' ।
दोहा-चौपाई शृंगारित गोस्वामी अनुकरन ।।

मधुसूदनदास :

'रामाश्वमेध' प्रबंधकाव्य अति बड़ा ।
पद्मपुराण आधार मान राम चरित जड़ा ।।

मनियार सिंह :

काशी के क्षत्रिय कविता देवपक्ष भरी ।
पार्वती माँ स्तुति हनुमान यश खूब करी ।।

कृष्णदास :

कृष्णभक्त चरित मधुर सृजनी ।
'माधुर्य लहरी' पृष्ठ चार सौ बीस बनी ।।

गणेश :

लालकवि के पौत्र ग्वाल कवि पुत्र ।
तीन ग्रंथ पद्यबद्ध छंद सात अंक सुत्र ।।

सम्मन :

नीति दोहे घर-घर गाँव प्रसिद्ध ।
'पिंगल काव्यभूषण' रीतिग्रंथ अनिरूद्ध ।।

ठाकुर :

तीन कवि 'ठाकुर' नाम कविता रचना ।
'असनवाले'-'असनी'-तीसरे 'बुंदेली' सजना।।

ललकदास :

कंठी धारी महंत जानिए लखनऊ के ।
'सत्योपाख्यान' ग्रंथ बड़ा वर्णनात्मके ।।

खुमान :

बंदीजन रचना 'अमरप्रकाश'-'अष्टयाम' ।
'लक्ष्मणशतक'-'हनुमानपंचक'- नखशिख नाम ।।

नवलसिंह कायस्थ :

अच्छे चित्रकार भक्ति औ ज्ञान भरे ।
काव्यग्रंथ बहुत पर लघु सीमा करे ।।

रामसहायदास :

काशी नरेश के आश्रित बनारस वासी ।
'रामसतसई' बिहारी अनुकरण साजी ।।

चंद्रशेखर :

वाजपेयी पिता मनीराम कवि ।
'हम्मीर हठ' ग्रंथ उच्चकोटि छवि ।।

बाबा दीनदयाल गिरि :

संस्कृत-हिंदी विद्वान् कवि भावक ।
स्वतंत्र काव्य सरस शैली पालक ।।

पजनेश :

'मधुरप्रिया'-'नखशिख'-'पजनेश प्रकाश' ।
कवित्त-सवैया फुटकल शब्द सुहास ।।

गिरिधरदास :

अल्प आयु लिखीं पुस्तक खूब ।
'सरस्वती भवन' पुस्तकालय रचना अनूप ।।

द्विजदेव (महाराज मानसिंह) :

ऋतु वर्णन मनुहार सजी श्रृंगार ।
'श्रृंगार बत्तीसी'-'श्रृंगार लतिका' बहार ।।

आधुनिक काल
(संवत् १९००-१९८०)
गद्य खण्ड
प्रकरण-१
सामान्य परिचय

गद्य का विकास

आधुनिक काल के पूर्व गद्य की अवस्था

संवत् चौदह सौ पगा 'पूछिबा'-'कहिबा' पुस्तक ।
ब्रजभाषा साहित्य की रही राजपूताना गद्य पक ।।

बिट्ठलनाथ :

ब्रजभाषा गद्य अव्यवस्थित 'श्रृंगार रस मंडन' ।
'चौरासी वैष्णवों की वार्ता'-'दो सौ बावन वैष्णवों की वार्ता' चुन ।।

नाभादास जी :

गद्य-स्वरूप राममय पुस्तक 'अष्टयाम' ।
दिनचर्या वर्णन किया ब्रजभाषा राम ।।

बैकुंठमणि शुक्ल :

ब्रजभाषा गद्य पुस्तकें 'नाचिकेतोपाख्यान' ।
'अगहन माहात्म्य'-'वैशाख माहात्म्य' करें पान ।।

सूरति मिश्र :

'बैताल पचीसी' ग्रंथ भाषा बोलचाल ।
ब्रजभाषा रूका गद्य संस्कृत उबाल ।।
'इत्यमर:'-'कथंभूतम्' तर्ज टीका ।
भाषा शक्तिहीन अर्थ फीका ।।

खड़ी बोली का गद्य :

खड़ी बोली उमगन व्यवहारिक ।
दशा - दिशा मुस्लिम दरबारिक ।।
प्रचलित होता दिखता उर्दूमय भाषित ।
खुसरो पद्य-पहेलियाँ खड़ी बोली खालिस ।।
औरंगजेब शायरी जमावट ।
फारसी मिश्रित खड़ी फसावट ।।
उर्दू साहित्य मेल विदेशी ।
नष्ट हुई भारतीय देशी ।।
'गंग कवि' 'चंद छंद बरनन की महिमा' ।
शिष्ट समाज व्यवहार धाक गरिमा ।।
संवत् सत्रह सौ अट्ठानबे लिखा सत्य निष्ठ ।
रामप्रसाद 'निरंजनी' 'भाषा योग वसिष्ठ' ।।
'मुंशी सदासुख' - 'लल्लू लाल' ।
रचा गद्य खड़ी बोली सवाल ।।
संवत् अठारह सौ अठारह ।
'दौलतराम' किया अनुवाद कह ।।
हरिषेणाचार्य कृत 'जैन पद्मपुराण' ।
सात सौ पृष्ठ संपूर्ण गुणान ।।
रीतिकाल अवसान राज्य अंग्रेजी व्यापक ।
शिष्ट समाज खड़ी बोली उर्दू सहायक ।।
आवश्यकता अंग्रेजी शासन भाषा जमी ।
संवत् अट्ठारह सौ साठ व्यवस्था रमी ।।

मुंशी सदासुख लाल 'नियाज' :

दिल्लीवासी मुंशी सदासुख लाल 'नियाज' ।
कंपनी अधीन रह लिखी उर्दू कृति साज ।।
'मुंतखबुत्तवारीख' निज वर्णन अतिसार ।
शिष्ट बोलचाल भाषा उर्दू बिन मतिसार ।।

इंशाअल्ला खाँ :

दिल्ली से लखनऊ बसे उर्दू शायर मान ।
'उदयभानचरित' चटकीली हिंदी गान ।।

लल्लूलाल जी :

गुजरात-ब्राह्मण आगरा के संस्कृत ज्ञाता ।
भागवत दशम स्कंध कथा 'प्रेमसागर' नाता ।।

सदल मिश्र :

'नासिकेतोपाख्यान' खड़ी बोली थाती ।
ब्रजभाषा-पूरबी बोली व्यवहार पाती ।।
हिंदू शिक्षित वर्ग ज्ञान उपनिषद् जागा ।
वेद शास्त्र-'ब्रह्म समाज' बंगाल प्रयागा ।।
'मेकाले' ने नब्ज पकड़ अंग्रेजी थोपी ।
हिंदू आहत शिक्षालय अंग्रेजी रोपी ।।

राजा शिवप्रसाद :

राजा शिवप्रसाद विद्या व्यसनी जानो ।
शिक्षा विभाग कार्यरत हिंदी प्रचार मानो ।।
सर्व शिक्षा हित विद्यालय लगे खोलने ।
हिंदी प्रचार-प्रसार भावना लगी डोलने ।।

भाषा अदालती उर्दूमय अफसोस जताना ।
शिक्षाविद् विरोधी पर हिंदी ही बताना ।।
विरोधी नेता 'सर सैयद अहमद' अंग्रेजी दास ।
लक्ष्मण और शिवप्रसाद थे हिंदी की आस ।।
फ्रांसीसी 'गार्सां द तासी' उर्दू पर रीझे ।
हिंदी विरोध सुन लक्ष्मण-शिवप्रसाद खीझे ।।

प्रकरण-२

गद्य साहित्य का आविर्भाव

सामान्य परिचय

हिंदी लिए बहाना उर्दू खूब उमड़ी ।
नागरी अक्षर साथ 'बनारस अखवार' कड़ी ।।

राजा शिवप्रसाद :

'शिवप्रसाद राजा' पाया विरोध मुस्लिमवादी ।
ऊल-जलूल विचार कहा हिंदी 'गँवार' भाषी ।।
क्रोध साध राजा संग पं० श्रीलाल ।
औ पं० वंशीधर लिखीं ठेठ हिंदी चाल ।।
कथा भोज-वीरसिंह-आलसियों को कोड़ा ।
पुस्तक संस्कृत मिश्रित सहज सरल हिंदी जोड़ा ।।
'राजा भोज का सपना'-'मानवधर्मसार' ।
नामक ये पुस्तक हिंदी कर्मपार ।।

फ्रेडरिक पिंकाट :

अंग्रेजी बुद्धि जागी देख पलट व्यवहार ।
फ्रेडरिक पिंकाट दिया साथ बने हिंदी सहार ।।
जोड़ लिए हिंदी-प्रेमी औ साहित्यकार ।
हुआ सफल अभियान हिंदुत्व भी साकार ।।

राजा लक्ष्मण सिंह :

राजा लक्ष्मण बल पा योगदान हिंदी को ।
लिखे ग्रंथ 'प्रजाहितेषी'-'शकुंतला नाटक' दो ।।

नवीन चंद्र राय :

नवीन चंद्र राय पुस्तकें रचीं पंजाब में ।
'स्त्री शिक्षा'-सिद्धांत 'ब्रह्म समाज' दें ।।

स्वामी दयानंद सरस्वती :

सरस्वती 'वैदिक ऐकेश्वरवाद' हुआ सत ।
नवविचार-नवशिक्षा फैले 'दयानंद' मत ।।
रचना 'सत्यार्थ प्रकाश' 'आर्य समाज' जगा ।
हिंदी यानी 'आर्य' भाव नगर-नगर उमगा ।।

पं० श्रद्धाराम फुल्लौरी :

पं श्रद्धाराम फुल्लौरी कथा-व्याख्यान कहे ।
पद्य-गद्य अध्यात्म पुस्तकें लिख ज्ञान बहे ।।
'भाग्यवती' उपन्यास प्रशंसा जन-जन बिखरी ।
सच्चे हितेषी-सिद्धहस्त लेखक महिमा निखरी ।।
आहट मिली गद्य हिंदी नव शृंगार हुआ ।
'भारतेंदु' का उदय शिक्षित वर्ग हुआ ।।

आधुनिक गद्य साहित्य परंपरा का प्रवर्तन

प्रथम उत्थान

(संवत् १९२५-१९५०)

प्रकरण-१

सामान्य परिचय

भविष्यवाणी हो गई सार्थक पं० श्रद्धाराम भरी ।
भारतेंदु हरिश्चंद्र काशी पुरोधा साहित्य परी ।।
'गद्य प्रवर्तक' वर्तमान संस्कारमयी भाषा ।
पद्य निखार प्राचीन इधर भाषा ब्रजी तराशा ।।
नव विषयों से सुरभित पल्लवित ।
हिंदी - साहित्य देश - समाज उल्लसित ।।
अभिभूत समाज भाषा खड़ी रूचिकर ।
साहित्यिक-प्राकृतिक जीवन हितकर ।।

पं० प्रतापनारायण मिश्र :

पद चिह्नों पर चले स्वच्छंद गति ।
कहावतें - मुहावरे विनोदशील मति ।।

उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी :

'प्रेमघन' उपनाम लेख प्राचीन भाव्य ।
वाक्यखंड गुँथी लड़ी से गद्यकाव्य ।।

पं० बालकृष्ण भट्ट :

खरी-खरी कहीं मनोरंजक भई ।
पुरातन संघर्ष में लिपटी नवीन दई ।।

ठाकुर जगमोहन सिह :

मधुर भारतीय रंगबेल जीवन जड़ी ।
भाषा-शैली शब्द शोधनी न लंबी मढ़ी ।।
गद्य साहित्य में हुआ प्रवर्तन नाटक से ।
हरिश्चंद्र अभिनय प्रकट 'जानकी मंगल' नाटक से ।।

लाला श्रीनिवासदास :

विशेष झुकाव मौलिक उपन्यास चमका ।
'परीक्षागुरु' पहले-पहल अंग्रेजी ढंग का ।।

बा० राधाकृष्णदास :

बा०राधाकृष्णदास रचयिता 'निस्सहाय हिंदू' ।
छोटा रूप बंगभाषा सम लिखा बहुत बिंदू ।।
निकल पड़ीं अनगिन पत्र-पत्रिकाएँ भी ।
भारतेंदु जीवन निकलीं साथ रहे लेखक भी ।।
हिंदी सेवा धूम-धड़ाका चारों ओर खिली ।
खुशियों की किलकारी जन-जन में मिली ।।

प्रकरण-२

गद्य साहित्य परंपरा का प्रवर्तन

प्रथम उत्थान

भारतेंदु हरिश्चंद्र :

जन्म वैश्यकुल भाद्र शुक्ल उन्नीस सौ सात ।
हिंदी भाषा हित किया जीवन भर प्रभात ।।
गद्य उच्च उन्नत सलिल अनुवादों से साज ।
'कविवचनसुधा' पत्रिका छापे कवि काज ।।
'हरिश्चंद्र मैगजीन' फिर 'हरिश्चंद्रचंद्रिका' ।
आठ प्रति बाद नई चाल में जनतंत्रिका ।।
'बाल बोधिनी' प्रकाश्य स्त्री उन्नति ।
मौलिक नाटक 'वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति' ।।
'हरिश्चंद्र युग' ख्यात मिली अनुशंसा ।
अल्प आयु प्रयाण मात्र पैंतीस बरसा ।।

पं० प्रतापनारायण मिश्र :

छोड़ उन्नाव बसे कानपुर संवत् उन्नीस सौ तेरह ।
हुआ प्रयाण उन्नीस सौ इक्यावन मनमौजी मेलह ।।

पं० बालकृष्ण भट्ट :

संस्कृत शिक्षक निकाला पत्र कहावत जड़ ।
प्रयाग वास पूरबी भाषा 'हिंदी प्रदीप' संस्कृत मढ़ ।।

उपाध्याय पं० बदरीनारायण चौधरी :

संवत् उन्नीस सौ बारह मिरजापुर जनमे ।
मृत्यु उन्नीस सौ उन्यासी फाल्गुन पूर्व पनपे ।।

लाला श्रीनिवासदास :

'तप्तासंवरण' प्रेमकथ्य नाटक रच डाला ।
'रणधीर और प्रेममोहिनी' भी खूब प्रचाला ।।

ठाकुर जगमोहन सिंह :

'विजय राघवगढ़' राजकुमार भारतेंदु मत ।
'श्यामास्वप्न' ग्राम्य-जीवन प्रकृति-वर्णन सत ।।

बाबू तोताराम :

बी.ए.पास अलीगढ़ वासी हैडमास्टर ।
'भारतबंधु' पत्र प्रेस छापा हितसागर ।।

पं० केशवराम भट्ट :

महाराष्ट्रीयन पूर्वज बिहार शिक्षा विभागी ।
लिखी पुस्तकें शिक्षालय स्तर थे अनुरागी ।।

पं० राधाचरण गोस्वामी :

संस्कृत-शास्त्री साहित्य-सेवी भाषा चाव ।
वृंदावन 'भारतेंदु' पत्र समाज-सुधार भाव ।।

पं० अंबिकादत्त व्यास :

हिंदी-संस्कृत विद्वान कवि धर्म व्याख्याता ।
सनातन-उपदेशी 'अवतार मीमांसा' संज्ञाता ।।

पं० मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या :

इतिहास सिद्ध 'रासो संरक्षा' रची ।
विद्वान् 'हरिश्चंद्रचंद्रिका' जची ।।

पं० भीमसेन शर्मा :

भक्त दयानंद स्वामी धर्म-ग्रंथ रच डाले ।
'संस्कृत भाषा की अद्भुत शक्ति' से शब्द निकाले ।।

काशीनाथ खत्री :

'ग्राम पाठशाला'-'बाल विधवा संताप' पुस्तकें ।
ऐतिहासिक रूपक में वर्णन हिंदू विधवा दमकें ।।

राधाकृष्णदास :

'सतीप्रताप' नाटक हरिश्चंद्र कृत पूर्ण किया ।
'दुखिनी बाला' कृति भरीं जीर्ण-शीर्ण कुरीतियाँ ।।

कार्तिकप्रसाद खत्री :

हिंदी-प्रेमी आसाम-बंगाल भाषा पत्र उद्योग ।
'रेल का विकट खेल' नाटक अपूर्ण प्रयोग ।।

फ्रेडरिक पिंकाट :

फ्रेडरिक पिंकाट हिंदी-प्रेमी साहित्य-श्रम किया ।
सत्य-भाव हिंदी-संस्कृति उच्च स्थान दिया ।।
'नागरी प्रचारिणी सभा' जमे हिंदी विद्वान ।
'सरस्वती' पत्रिका दर्शन आरंभ द्वितीय उत्थान ।।

गद्य साहित्य का प्रसार
द्वितीय उत्थान
(संवत् १९५०-१९७५)
प्रकरण-३
सामान्य परिचय

गद्य साहित्य उत्थान उन्नीस सौ पचास जानो ।
भारतेंदु सत्ता स्वतंत्र पूरित मनमोहक मानो ।।
चाल खली एक ऐसी अंग्रेजी डिग्रीधर कीनी ।
मातृभाषा प्रति उदासीन अंग्रेजी भावभीनी ।।
'मुझे तो हिंदी आती नहीं' तुच्छ बोल हिंदू के ।
'चिंता न करो काम शुरू करो' दृढ़ संकल्पी के ।।
धैर्य बँधा उमगे लेखक फिर मध्यम् गति से ।
प्रयोग किए अंग्रेजी-फारसी हिंदी संगति से ।।
हुई व्याकरण शून्य बंगभाषा ने दी दस्तक ।
संस्कृत परिमार्जित हिंदी बनी समरथक ।।

पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी :

पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी बने साध्य सहाई ।
पथ बतलाया स्वयं सुधारी व्याकरण भाषाई ।।
हठी-अनाड़ी लेखक बंधु तत्पर भूल सुधारें ।
द्विवेदी जी सानिध्य रह मधुर हिंदी पुकारें ।।

पं० गोविंद नारायण मिश्र :

पं० गोविंद नारायण मिश्र पुस्तक 'विभक्ति-विचार' ।
हिंदी शुद्ध विभक्ति अनुदित परंपरा निखार ।।

शैली सघन रूप गुंफित विविध विचार ।
सूक्ष्म-गूढ़ भावों संग रचित तिलिस्म बिसार ।।
उपन्यास की धूम मची हिंदी साहित्य मंगला ।
नाटक 'महाराणा प्रताप' राधाकृष्णदास सफला ।।
निबंध परंपरा भी निकसी आधी पूरी ।
अंग्रेजी साहित्य सम पीछे रही अधूरी ।।
समालोचना सूक्ष्म साहित्यिक जीवन स्तर ।
'विशुद्ध चरितावली'-'चैतन्य महाप्रभु जीवन' प्रवर ।।

प्रकरण-४

गद्य साहित्य का प्रसार

सामान्य परिचय

हिंदी गद्य विभाजन चार नाटक-उपन्यास-कहानी-निबंध ।
मौलिक नाटक विस्मृत अनुवाद प्रवृति सन्निद्ध ।।
बंगभाष्य नाटक 'वीरनारी'-'पद्मावती'-'कृष्णकुमारी' ।
बाबू गोपालराम 'वभ्रुवाहन'-'वनवीर' नाटक अनुवादी ।।
द्वितीय उत्थान अनुवादिक प्रवृति उमड़-घुमड़ उमगी ।
पं० रूपनारायण पांडे-रवींद्र बाबू, द्विजेंद्रलाल राय जगी ।।
अंग्रेजी-संस्कृत अनुवाद पद्य-गद्य-पुराण ग्रंथा ।
मूल भाव रक्षित-सरसिज शिष्ट साहित्य व्यवस्था ।।

मौलिक नाटक :

पं० किशोरी लाल गोस्वामी :

दो नाटक 'चौपट चपेट'-'मयंक मंजरी' लिखे ।
श्रृंगार रस-दृष्टि लिखे कुछ प्रथम अर्थहीन दिखे ।।

पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय :

'रूक्मिणीपरिणय' - 'प्रद्युम्नविजय - व्यायोग' ।
कल्पित कथावस्तु जड़ित मौलिक नाटक प्रयोग ।।

उपन्यास अनूदित :

द्वितीय उत्थान उपन्यासकार सुजान चितेरे ।
मौलिक उपन्यास-अनुवाद सकल चित चेरे ।।
'चित्तौरचातकी' अनुवाद मर्यादाहीन बताया ।
फैंकीं प्रतियाँ गंगा लहरें आंदोलन जगाया ।।

बाबू गोपालराम :

तत्पर तुरंत ही अनुवादे उपन्यास कई ।
वक्रभरी मुहावरे जड़ी पूरबी शब्द जई ।।

मुंशी उदितनारायण लाल :

गाजीपुर वासी अनुवाद 'दीपनिर्वाण' किया ।
पृथ्वीराज ऐतिहासिक गाथा उपन्यास दिया ।।
साक्षी श्रृंखला अनुवादों की पुष्ट पल्लवित ।
बंकिमचंद्र - रमेशचंद्रदत्त - हाराणचंद्र रक्षित ।।

मौलिक उपन्यास :

चंडी चरणसेन - शरतबाबू कई जनमे ।
रवींद्र बाबू-ईश्वरी प्रसाद-रूप नारायण भी चमके ।।

बाबू देवकीनंदन खत्री :

बाबू देवकीनंदन खत्री मौलिक संबृद्धे ।
तिलिस्म-ऐयारी 'चंद्रकांता' नवयुवक दमके ।।
हिंदी सीख पढ़ें 'चंद्रकांता' लेखक भी बन गए ।
'चद्रकांता संतति' पढ़कर उर्दूभाषी भी जम गए ।।
आज तलक उत्कंठा जागृत यश घंटिका बजी ।
प्रेम और जासूस भावना लपक-झपक सजी ।।

बाबू हरिकृष्ण जौहर :

साहित्य - जगत् में उच्च कोटि पनपे ।
उपन्यास से अधिक अपनेपन से चमके ।।

बाबू ब्रजनंदन सहाय बी.ए. :

सौंदर्य सुधा के सागर भाव प्रधान उपन्यास ।
वेगवती व्यंजना - मनोविकार प्रगल्भ भास ।।

छोटी कहानियाँ :

मानव स्वभाव - मानव कला कथा गोई ।
मार्मिक कथा 'बृहत्कथा' घटना-प्रधान होई ।।

'बैताल पचीसी'-'सिंहासन बत्तीसी' पुरानी पोथी ।
भिन्न स्थिति चित्रण भर लिखी कहानी छोटी ।।

बंगमहिला :

जनमी महिला नाम 'बंग महिला' कहानीकार ।
कहानी रचयिता औ बंगला से अनुवादकार ।।
मौलिक कहानी 'दुलाईवाली' लिख हुईं प्रतिष्ठित ।
'इंदुमती' औ 'ग्यारह वर्ष का समय' अधिष्ठित ।।
'ग्राम' कहानी जयशंकर प्रसाद जानी ।
और अनेक तत्पश्चात् तृतीय उत्थान आनी ।।
जी.पी. श्रीवास्तव रची कहानी हास्य जड़ी ।
पं० विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक 'रक्षाबंधन' छपी ।।
'कानों में कंगना' लेखक राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह ।
पं० ज्वालादत्त शर्मा-चतुरसेन शास्त्री सहविद् ।।

पं० चंद्रधर 'गुलेरी' :

चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' हिंदी अनन्य आराधक ।
हिंदी-संस्कृत-पंजाबी 'उसने कहा था' भावक ।।
मर्यादा स्वर्गिक सुविचार प्रेम संग आचार ।
घटना संग्रह यथार्थवाद अद्वितीय कहानीकार ।।
द्वितीय उत्थान काल का अंतिम भाग ।
सर्वश्रेष्ठ 'प्रेमचंद' लेखक हिंदी प्रयाग ।।
पूर्ण विकास हुआ तृतीय उत्थान काल ।
प्रेमचंद व्यापक लघु कहानी सर्व काल ।।

निबंध :

निबंध विकास भाषा अभ्युदय शक्ति का ।
गद्य विधान मेल-भाव वर्णन-विचार का ।।

निबंध समाहित अर्थ विशेष व्यक्तिगतता ।
एक औ अनेक बातों में संबद्ध समुन्नतता ।।
तत्व-विचारक वैज्ञानिक भाव उच्च गुणग्राही ।
करुण-प्रकृति लेखक करुणा गंभीर वेदनाग्राही ।।
हास्यपक्ष आनंद विनोद हँसमय पक्ष उजागर ।
सूक्ष्म-केंद्र नानाक्षेत्र तुच्छ गंभीर विषय भर ।।
भारतेंदु से चली परंपरा लेखन अन्य अपनाई ।
वर्णनात्मक निबंध शैली समसामयिक बन आई ।।
जीवन चर्या-ऋतुअनुचर्या पर्व-त्यौहार बहुभाई ।
'लार्ड बेकन' का कुशल अनुवादन भाषा सुखद बनाई ।।

पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी :

'सरस्वती' संपादक लेख लिखे फुटकल ।
निबंध अनोखे भाषा नूतन चमत्कार प्रबल ।।
'कवि और कविता' सूक्ष्म विचार-कला लेखन ।
गूढ़ गुंफित विचार-शैली गद्य संबृद्ध मेघन ।।

पं० माधव प्रसाद मिश्र :

समाज सुधारक-संस्कृति रक्षक ।
अद्भुत 'वैश्योपकार' संपादक ।।
मिश्र जी लिखे जीवन-चरित्र विद्वत्जन के ।
स्थायी विषय 'धृति' औ 'क्षमा' केवल उद्धृते ।।

बाबू बालमुकुंद गुप्त :

समकालीन अनुभवी - कुशल संपादक ।
'भारतमित्र'-बंग संपादक चलते पुरजे उन्मादक ।।

पं० गोविंद नारायण मिश्र :

'कवि और चित्रकार' गद्य लेख वाला ।
समास - अनुप्रास शंब्द गुच्छ अटाला ।।

बाबू श्यामसुंदरदास जी :

हिंदी कवि हिंदी भाषी खोज निकाले ।
आधुनिक सभ्यता विधान पद्धति लेख सँभाले ।।

पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी :

हास्य-विनोद भाषण बाजी अस्थायी रचना ।
'हिंदीकोविद-रत्नमाला' जीवनवृत गहना ।।

पं० चंद्रधर 'गुलेरी' :

जयपुर जनमे संवत् उन्नीस सौ चालीस ।
'कांगड़ा' से पूर्वज जयपुर आकर बसे 'वाहीक' ।।
शैली विशिष्ट सारगर्भित नाम 'गुलेरी' यशी ।
'कछुआ धरम'-'मारेसि मोहिं कुठाऊँ' अनुशंसी ।।

अध्यापक पूर्णसिंह :

निबंध लेखक विचार-भाव मिश्रित शैली ।
'आचरण की सभ्यता'-'मजदूरी और प्रेम'- 'सच्ची वीरता' फैली ।।

बाबू गुलाबराय (एम.ए., एलएल.बी.) :

'कुरूपता' - 'कर्त्तव्य संबंधी रोग' ।
'निदान और चिकित्सा' आदि निबंध संयोग ।।

समालोचना :

'समालोचना' अर्थ विवेचन गुण-दोष उदाहरण ।
युरोप पद्धति पर रचना स्वंतत्र विषय उच्चारण ।।
'निर्णयात्मक' - 'व्याख्यात्मक' मार्ग बनाए ।
निंदा और प्रशंसा उपरांत समीक्षक बताए ।।

मिश्रबंधु उपकार रचा 'हिंदी नवरत्न' ग्रंथ ।
भाषा त्रुटि सुधारी समालोचनात्मक ग्रंथ ।।
पहले लेखक लिखते अव्यवस्थित व्याकरण शून्य ।
बुद्धि भ्रम मिटा सुधारी गल्ती ऊट-पटाँग मूल्य ।।

पं० पद्मसिंह शर्मा :

आलोचनात्मक टिप्पणी कीनी कवि बिहारी पर ।
'आर्यासप्तशती'-'गाथासप्तशती' पद्य शृंखला दोहा कर ।।
साहित्य समीक्षा देव - बिहारी न्यायप्रिय ।
पक्षपात प्रभुता साहित्यिक मूल्य समताप्रिय ।।

पं० कृष्ण बिहारी मिश्र :

देव बड़े या उच्च बिहारी तुलना समस्तर ।
पं० कृष्ण बिहारी मिश्र 'मति रामग्रंथावली' रचकर ।।

गद्य साहित्य की वर्तमान गति
तृतीय उत्थान
(संवत् १९७५ से)
प्रकरण-५
सामान्य परिचय

हिंदी गद्य विलायती तख्ती शोभा गलियों में ।
कुछ विकास कुछ अंधविश्वास छाया कलियों में ।।
हिंदी के अधिकारी हैं कुछ अंग्रेजी कारी ।
'आधुनिकता' यूरोपी चाल है अनाड़ी पारी ।।
साहित्य शुचित रूक पड़ा झूठी-सच्ची सोचों में ।
प्रेमचंद सर्वचिंतकीय उच्च-भाव बोधों में ।।
'साम्यवाद' विस्तार यूरोपिय सिद्धांतों से ।
'बर्नाडशा' प्रशंसा यह युग 'समस्या नाटकों' से ।।

उपन्यास-कहानी :

हुई समृद्ध सुविकसित 'उपन्यास-कहानी' ।
सामाजिक-उत्थान प्रेमचंद साहित्य-निधि मानी ।।
बा० वृंदावन लाल वर्मा लिखे ऐतिहासिक ग्रंथ ।
पं० विश्वंभर नाथ कौशिक ने सामाजिक ग्रंथ ।।
उपन्यासकार जैनेंद्र कुमार रहे सामाजिक ।
प्रतापनारायण श्रीवास्तव रहे सामासिक ।।
किसान और जमीदार खाई गहरी शौषण की ।
सत्य विचार भरे साहित्य है पुकार रोपण की ।।
'लक्ष्य' यही उपन्यासकार करें साहित्य सृजन ऐसा ।
पाप-पुण्य मीमांसा-प्रवृति जीवन-चिंतन कैसा ।।

भगवती चरण वर्मा :

भगवती चरण वर्मा 'चित्रलेखा' ग्रहस्थाश्रम मार्मिक ।
उदाहरण सहित रचना उपन्यास सृजन हार्दिक ।।

राखालदास वंद्योपाध्याय :

प्रसिद्ध पुरातत्व विद् ऐतिहासिक उपन्यासकार ।
'करुणा' -'शशांक'-'धर्मपाल' के सिद्ध रचनाकार ।।

प्रेमचंद :

गोदान - निर्मला उपन्यास सामाजिक ।
मर्म भावना समाज - साधना मनवांछित ।।

विश्वंभर नाथ कौशिक-पं० चतुरसेन शास्त्री :

श्री विश्वंभर नाथ कौशिक 'माँ'- 'भिखारिणी' ।
पं० चतुरसेन शास्त्री 'हृदय की प्यास' मनुहारिणी ।।

छोटी कहानियाँ :

लिखीं विशद् - विस्तृत कवियों का योगदान ।
मनोभाव-संवेदना-सिद्धांत भरा कवि वर्तमान ।।

चंडीप्रसाद 'हृदयेश' :

चंडीप्रसाद 'हृदयेश' 'उन्मादिनी' सौदामिनी अपत्यस्नेह ।
सत्वोद्रेक स्तब्धता भरी पूरन और कालीशंकर गेह ।।
सादे ढंग व्यजंक घटनाएँ मुख्य प्रणाली मढ़ी ।
रमणीय अलंकृति विशद् मार्मिक परिस्थिति बढ़ी ।।

प्रेमचंद :

तथ्य-प्रतीक लाक्षणिक कहानी 'पांडेय बेचन' लिखी ।
संस्कार के वर्ग भिन्नकर प्रेमचंद 'शंतरज के खिलाड़ी' लिखी ।।
सामाजिक - आर्थिक पीड़ितजन - दुर्दशा कही ।
राजनीतिक आंदोलन युवक गण त्याग-प्रेम मूर्ति बही ।।

रायकृष्णदास :

सभ्यता और संस्कृति 'रायकृष्णदास' कहानी भली ।
'अंत:पुर का आरंभ' 'श्रीमंत समंत' चँबेली की कली ।।
कुछ कहानी रचना श्रीबिंदू ब्रह्मचारी ।
पौराणिक – ऐतिहासिक देश एशियावारी ।।
भारतवासी संस्कृति कुछ रची - पची ।
'प्रसाद' कवि 'आकाशदीप' कहानी रची ।।

नाटक :

नाट्य साहित्य आगे बढ़ निकला ।
भिन्न रूप - रंग आकार प्रकार पिघला ।।
नकल तर्ज यूरोप वैचित्र्य हुआ जाग्रत ।
अंक आरंभ बीच समय-स्थान-पात्र सूक्ष्म लागत ।।
'सेठ गोविंददास' – 'पं० . लक्ष्मीनारायण' ।
बंगला – पाश्चात्य देख हिंदी पारायण ।।
काव्यमयी नाटक हिंदी साहित्य शास्त्र ।
रसविधान - शील वैचित्र्य प्रधान अंग मात्र ।।

जयंशकर प्रसाद-हरिकृष्ण 'प्रेमी' :

सामंजस्य दोनों 'प्रसाद - प्रेमी' विद्वान ।
गूढ़ प्रेम-उत्कृष्ट व्यजंना 'स्कंदगुप्त' विज्ञान ।।
यद्यपि ऐतिहासिक नाटक दोनों में आदर्श ।
देशप्रेम – विश्वप्रेम – अध्यात्म परामर्श ।।

पं० गोविंदबल्लभ पंत :

पंत रचित 'वरमाला' मार्कंडेय कथा ।
'राजमुकुट' पन्नाधाय अलौकिक व्यथा ।।
'मद्य' रची 'अँगूर की बेटी' समाज मद्य कथा ।
पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र स्त्री 'यथातथ्यवाद' प्रथा ।।

पं० उदयशंकर भट्ट-जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद' :

वासी पंजाब रचे पौराणिक नाटक ।
'प्रताप प्रतिज्ञा' शौर्य - शुचित नाटक ।।

सुमित्रानंदन पंत - कैलाश नाथ भटनागर :

कवि कल्पना मुस्काती 'ज्योत्सना' नाटक ।
'भीम प्रतिज्ञा' छात्र शैक्षिक भाव नाटक ।।

चतुरसेन शास्त्री - भोलानाथ शर्मा एम.ए. :

'अमर राठौर' - 'उत्सर्ग' कथावस्तु नाटक ।
अनुवाद 'फाउस्ट' जर्मन कवि 'गेटे' नाटक ।।

निबंध :

हुआ विकास उच्च शिक्षा नित प्रति ।
विश्वविद्यालय गहन सोच-शैली उन्नति ।।
निबंध असाधारण उत्कृष्ट परायण ।
हिंदी साहित्य नूतन अनुकायण ।।

चंद्रशेखर मुखोपाध्याय :

हिंदी काव्य गद्य प्रबंध भावुकमय ।
'उद्भ्रांत प्रेम' 'चंद्रशेखर मुखोपाध्याय' हय ।

चतुरसेन शास्त्री :

तरंगवती भाषा मुखरित 'अंतस्तल' भई ।
पद्धति यही 'रवींद्र बाबू' 'गीतांजलि' दई ।।
वियोगी हरि भावुक संयोग-वियोग 'अंतर्नाद' ।
सीतामऊ मार्मिक डॉ० रघुवीर सिंह बाद ।।

समालोचना और काव्य मीमांसा :

परिवर्तन समालोचना तृतीय उत्थान हुआ ।
तुलसी - सूर - कबीर - जायसी आलोचना हुआ ।।

पं० कृष्णशंकर शुक्ल :

'केशव की काव्यकला' सुगढ़ अनुसंधान ।
समालोचना चर्चित चमकी भरे प्रमान ।।

पं०गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' :

'गुप्तजी की काव्यधारा' सूक्ष्म मार्मिक ।
मैथिलीशरण रचना पक्ष विद्वत्जन उद्घाटित ।।

पं० शांतिप्रिय द्विवेदी :

'हमारे साहित्य निर्माता' साहित्यकार भरी ।
कवि-लेखक प्रकृति विशेषता विस्तृत करी ।।
झूठ औ चाटुकार प्रशंसा अध्यात्म रहस्य करी ।
अकर्मण्यता बुद्धि-शैथिल्य बढ़ा बुद्धि मरी ।।

बाबू श्यामसुंदरदास - पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी :

'साहित्यालोचन' शिक्षोपयोगी सिरमौर गढ़ी ।
'विश्व साहित्य' यूरोपीय पाश्चात्य काव्य मढ़ी ।।
पश्चिम तड़क-भड़क अनुयायी मतवाले भूले ।
जर्मन - फ्रांस - इटली - स्वीडन प्रशंसक झूले ।।
भारतीय भाषा गौण मूल्यहीन जताते ।
गैरों के बल भटक आतंक डंक लगाते ।।
साहित्य-संस्कृति हुई प्रभावित सीमा में ।
चित्रकारी-मूर्तिकारी नकलभरी भाषा में ।।
नारी सौंदर्य उजागर होने लगा काव्य में ।
कविता नर-नारी बिंदास अंग-प्रत्यंग में ।।
काव्य स्वप्न 'मद' कविता रसमय ।
फारस का कुछ चलन इस्लाममय ।।
सूफी शायर अलग-थलग मतवाले प्रेममय ।
सभी हुए मदमस्त भवभूति से पद्माकरमय ।।
चलता रहा कारवाँ यूरोप साहित्य शून्यमय ।
चिंतन शून्य सत्यं-शिवं-सुंदरम् मुखरमय ।।

प्रकरण-१

काव्य खण्ड

(संवत् १९००-१९२५)

पुरानी धारा :

कवित्त परंपरा निर्बाधित गति चली ।
भक्तिकाल-रीतिकाल गद्य विधा संग पली ।।
भजन-ऐतिहासिक-अलंकार-नायिका नेह ।
श्रृंगारिक वीर रस दोहे-सवैये काव्य गेह ।
कश्मीर से चली काव्यमय ब्रजभाषा ।।
गुजरात - बिहार - कुमाऊँ गढ़ भाषा ।
चली निरंतर दक्षिण भारत धाम ।
'गढ़ राजवंश' गढ़ा चित्र मोलाराम ।।

सेवक-महाराज रघुराज सिंह :

'वाग्विलास' नायिका भेद ग्रंथ सृजना ।
रीवाँ नरेश 'रामस्वयंवर' भक्ति रचना ।।
श्रृंगारिक प्रबंध काव्य 'रूक्मिणी परिणय' ।
'आनंदांबुनिधि' औ 'रामाष्टयाम' अभिनय ।।

सरदार :

कविताकाल संवत् उन्नीस सौ दो-उन्नीस सौ चालीस ।
सिद्धहस्त मर्मज्ञ काव्यग्रंथ - टीका वागीस ।।

बाबा रघुनाथदास रामसनेही :

महात्मा साधु वृतांत पौराणिक गाथा ।
संक्षेप स्वरूप 'विश्रामसागर' भक्ति साथा ।।

ललित किशोरी :

असल नाम कुंदनलाल वैश्य लखनऊवासी ।
निर्माण 'साहजी' वृंदावन मंदिर स्मररासी ।।

राजा लक्ष्मण सिंह :

गद्य प्रवर्तक ब्रजभाषा में कविता जागी ।
'मेघदूत' अनुवाद ललित सवैया पागी ।।

लछिराम :

'बस्ती' जिला जन्म प्रशंसा खूब कीन्ही ।
राजा कर 'सम्मान' भूमि दक्षिणा दीन्ही ।।

गोविंद गिल्लाभाई :

भावनगर जनमे ब्रजभाषा काव्य रचे ।
'नीति विनोद'-'षट ऋतु'- 'प्रारब्ध पचासा' सजे ।।

नवनीत चौबे :

मथुरावासी कविता रचना पुरानी परिपाटी ।
नवगति योग संबंधी रचना करि डाली ।।

पुरानी धारा के अन्य कवि :

भारतेंदु हरिश्चंद्र-प्रतापनारायण मिश्र कवि ।
बदरीनारायण चौधरी-ठाकुर जगमोहन सिंह छवि ।।
पं० अंबिकादत्त-रामकृष्ण वर्मा पुरातन भी ।
लाला सीताराम-पं०अयोध्यासिंह उपाध्याय जी ।।
पं० श्रीधर पाठक-बा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर' ।
रायदेवीप्रसाद 'पूर्ण' - वियोगी हरि प्रवर ।।
दुलारे लाल जी भार्गव - पं० रामनाथ कीन ।
नाथूराम शंकर शर्मा - लाला भगवानदीन ।।

भारतेंदु हरिश्चंद्र :

गद्य-पद्य ब्रजभाषा संग सजी सवैया कविता ।
जन-साधारण भाषा बोल-चाल रस-सरिता ।।

पं० अंबिकादत्त व्यास :

प्रतिभा बल प्रसन्न कर डाला कवि समाज ।
भक्ति - प्रेम - श्रृंगार मार्मिक कविता ससाज ।।

पं० प्रतापनारायण मिश्र :

समस्यापूर्ति करते ढंग पुराने भरते ।
'रसिक समाज' कानपुर श्रोता मन हरते ।।

उपाध्याय बदरीनारायण :

'चरचा चलिबे की चलाइए ना' सवैया ।
'कजली कादंबिनी' है कजली ग्रंथैया ।।

ठाकुर जगमोहन सिंह :

सरस सवैया श्रृंगारी पुस्तक कई रचीं ।
कवित्त 'मेघदूत' अनुवाद 'श्यामा' रंग जचीं ।।

पं० अंबिकादत्त व्यास और बाबू रामकृष्ण वर्मा (बलबीर) :
पं० नकछेदी तिवारी और पं० विजयानंद त्रिपाठी :

उत्साही काशी कवि समाज रंग मथे ।
'समस्यापूर्ति प्रकाश' - 'बिहारी बिहार' रचे ।।

लीला सीताराम :

'भूप' उपनाम कवि ने किए कई पद्यानुवाद ।
'रघुवंश' दोहा - चौपाई मेघदूत 'घनाक्षरी' बाद ।।

पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय :

खड़ी बोली आधुनिक विषयी कवि ।
'रसकलश' कृति क़विताएँ पुरानी छवि ।।

पं० श्रीधर पाठक :

खड़ी बोली संग ब्रजभाषा कविता मधुर सरस ।
'ऋतु श्रृंगार' अनुवाद रसभरे सवैया परस ।।

बा० जगन्नाथदास 'रत्नाकर' :

ब्रजभाषा पुट चुस्त गठीला मर्मज्ञी ।
'हिंडोला'-'काव्य संवर्धिनी' यज्ञी ।।
'उद्धवशतक'-'गंगावतरण'-'हरिश्चंद्र' सुंदर ।
प्रबंध-काव्य रचना-कौशल अद्वितीय 'रत्नाकर' ।।

रायदेवीप्रसाद 'पूर्ण' :

'रसिक समाज' स्मरणीय 'पूर्ण' कवि चर्चा ।
'रसिक वाटिका' पत्रिका समस्यापूर्ति कर्त्ता ।।

वियोगी हरि :

'ब्रजभूमि'-'ब्रजभाषा'-'ब्रजपति' उपासक ।
'प्रेमशतक'-'प्रेमपथिक'-'प्रेमांजलि' संवाहक ।।

दुलारे लाल जी भार्गव :

साहित्य क्षेत्र में बारीकी खड़ी बोली युग दोहे ।
बिहारी सम प्रतिभाशाली स्निग्ध रस सोहे ।।

प्रकरण-२
काव्य खण्ड
(संवत् १९२५-१९५०)

नई धारा : प्रथम उत्थान

दमकी-चमकी उच्च स्वरों में देशभक्ति बानी ।
हास्य-विनोद गति अपनी भर वीर-शौर्य जानी ।।
अत्याचार-अन्याय उपचार जन्मभूमि उद्धार जगा ।
नई सुमति-नई व्यवस्था कविता-बुद्धि विकास पगा ।।
विषयों में रूपता अनेक विधि-विधान बदला ।
पद्यात्मक निबंध शुष्क और इतिवृत्तात्मक बन चमका ।।

भारतेंदु हरिश्चंद्र :

भारतेंदु हरिश्चंद्र देशभक्ति 'भारत दुर्दशा' रचा ।
देशभक्ति-भविष्य भावना पुनीत भाव संचार मचा ।।

पं० प्रतापनारायण मिश्र :

हास्य-विनोदपूर्ण रचना स्वमेव सुमोद उमड़ पड़ी ।
'हरगंगा'-'तृप्यंताम्' कहावत 'हिंदी की हिमायत' जड़ी ।।

उपाध्याय पं० बदरीनारायण चौधरी :

छंदो में यतिभंग मगर दोषी नहीं माना ।
देश-दशा सुधारक काव्य मर्ममयी जाना ।।

ठाकुर जगमोहन सिंह :

प्राचीन संस्कृति संस्कार काव्य-रचना ।
प्रकृतिमय विंध्य प्रदेश अनुराग सुमरना ।।

पं अंबिकादत्त व्यास :

फुटकल रचनाएँ पद्य बेतुके गढ़ डाले ।
असफलता पाई छंद प्रचलित मढ़ डाले ।।
आगे चलकर मचा आंदोलन खड़ी बोली हिंदी ।
पाँच तरह से करी व्यक्त मौलवी और मुंशी बिंदी ।।
पंडित औ मास्टर स्टाइल अयोध्या प्रसाद खत्री ।
बन मुखिया झंडा फहराया खड़ी बोली पत्री ।।

प्रकरण-३

काव्य खण्ड

(संवत् १९५०-१९७५)

नई धारा : द्वितीय उत्थान

पं० श्रीधर पाठक :

पं० श्रीधर पाठक कृति 'एकांतवासी योगी' ।
निर्जन वन में प्रेम व्यथा स्त्री-पुरूष औ प्रेमयोगी ।।
काव्य खड़ी बोली प्राकृतिक पेड़-पौधे पशु-पंछी ।
सिमट गई भाव अभिव्यंजना नैसर्गिक स्वच्छंदी ।।

पं० अयोध्यासिंह जी उपाध्याय :

हिंदी लब्ध प्रतिष्ठ कवि खड़ी बोली ।
उर्दू छंद माँज कवित्त हिंदी जड़ घोली ।।
'चार डग हमने भरे तो क्या किया ।
है पड़ा मैदान कोसों का अभी' जिया ।
'प्रियप्रवास' काव्य अनमोला कृष्णजयी ।।
काव्यकला भावव्यंजना वर्णनात्मकमयी ।
'चोखे चौपदे' काव्य संग्रह मुहावरों का ।।
'वैदेही वनवास' द्विकलात्मक भावों का ।

पं० महावीर प्रसाद जी द्विवेदी :

द्वितीय उत्थान पद्य संस्कृतवृत्त भर ।
ब्रजभाषा 'अयोध्या का विलाप' राम कर ।।
नागरी प्रचारिणी पत्रिका छापा ।
संस्कृतवृत्त संग पर रही ब्रजभाषा ।।

बाबू मैथिलीशरण गुप्त :

खड़ी बोली कविता अनेक रचयिता ।
'सरस्वती' संपादक द्विवेदी से कर हिया ।।

प्रबंध काव्य 'रंग में भंग' कथा चित्तौड़-बूँदी ।
नवयुवक मन मोहा काव्य 'भारतं भारती' गूँथी ।।

पं० रामचरित उपाध्याय :

संस्कृत पुरोधा कविता शिरोमंणी ।
'राष्ट्रभारती'-'देवदूत'-'देवसभा'-'देवी द्रौपदी'।।
'भारत भक्ति' - 'रामचरितचिंतामणि' ।
भाषा खड़ी बोली प्रबंध काव्य मणि ।

पं० गिरिधर शर्मा नवरत्न :

ब्रजभाषा कवि-अनुवादक 'शिशुपाल वध' ।
सरस्वती में छपीं कविताएँ अधिकतर गद्यवत ।।

पं० लोचन प्रसाद पांडेय :

रचा बालकपन से काव्य कथा प्रबंध-फुटकल ।
प्रकृति प्रेम व्यापक दृष्टि मृगी दुख प्रबल ।।

द्विवेदी मंडल के बाहर की काव्यभूमि :

द्विवेदी युग प्रकटा प्रभाव अनेक कवि जनमे ।
सरस प्रभावी कविता रायदेवीप्रसाद 'पूर्ण' ये ।।
पं० नाथूराम शंकर शर्मा-पं० गयाप्रसाद शुक्ल ।
पं० रामनरेश त्रिपाठी-पं० सत्यनारायण कवि रत्न ।।
लाला भगवानदीन आदि अधिकांश दोरंगी ।
ब्रजभाषा औ खड़ी बोली नूतन विषय उमंगी ।।
त्याग-वीरता जन्म-भूमि प्रेम जोशीला भाव ।
दार्शनिक पौराणिक ऐतिहासिक प्रसंग दाव ।।

रायदेवीप्रसाद 'पूर्ण' :

पुरानी धारा ब्रजभाषा 'रसिक वाटिका' पत्रिका ।
समीचीन कवि कविता छापी पौराणिक मतिका ।।

पं० नाथूराम शंकर शर्मा :

आर्यसमाज अनुयायी उदंडी स्वभाव कवि ।
डाट-फटकार-विधवा हित 'गर्भरंडा रहस्य' रचि ।।

पं० गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही' :

भावुक - सरस हृदय कवि बोली खड़ी ।
'प्रेमपचीसी' - 'कृषक क्रंदन' - 'कुसुमांजली' ।।

पं० रामनरेश त्रिपाठी :

सम्माननीय कवि भाषा सुगढ़ प्रसाद गुण ।
'मिलन'-'पथिक'-'स्वप्न' खंडकाव्य स्वच्छंद मर्मधुन ।।

स्व० लाला भगवानदीन :

सरल हृदय-सादा रहन हिंदी साहित्य शिक्षामय ।
पुण्य कार्य खोला 'काशी साहित्य विद्यालय' ।।
ब्रजभाषा कविता लिखीं खड़ी बोली भी ।
टीकाएँ प्राचीन काव्यों कर पुण्य कर्म भी ।।

पं० रूपनारायण पांडेय :

दोनों भाषा अजमाईं ब्रजभाषा-खड़ी बोली ।
'पराग' काव्य संस्कृत औ हिंदी दोनों छंद होली ।।

पं० सत्यनारायण 'कवि रत्न' :

ब्रजभाषी कवि कृष्ण भक्ति ढंग रचना ।
जीवन विषम बाल से दांपत्य असहना ।।

प्रकरण-४

काव्य खण्ड

(संवत् १९७५ से)

नई धारा : तृतीय उत्थान

१. वर्तमान काव्यधाराएँ :

पच्चीस-तीस वर्ष मँज निकली वर्तमान काव्यधारा ।
पद्य प्रवाह खोले तीन रास्ते उर्दू-संस्कृत-हिंदी धारा ।।
बह्रों का-वृतों का-छंदों का तीनों भाषा पर ।
रचने लगे कविजन अपने-अपने बह्रों-वृतों-छंदों पर ।।
तृतीय उत्थान काव्यत्व स्फुरण अच्छा खड़ी बोली का ।
प्रबल-व्यापक नूतन पग देशप्रेम राजभक्ति झोली का ।।
तृतीय उत्थान राजनीति आर्थिक परतंत्र ।
कविवाणी बलिदान स्वतंत्रता देवी की वेदी पर स्वंतत्र ।।
गाँधी जी अनुवाद 'टालस्टाय वाणी' ।
'मशीन सभ्यता घातक' धर्मबुद्धि जाणी ।।
हुआ भूमंडल एक ध्वनित शिक्षित जन मिलना-जुलना ।
शोषक साम्राज्यवाद भर्त्सना आंदोलन करना गुनना ।।
किसान-मजदूर-अछूत-कल-कारखाने प्रतिध्वनित हुए ।
परिवर्तन 'वाद' पुकार 'क्रांति' नाम प्रबल भए ।।

मैथिलीशरण गुप्त :

कविता परिमार्जित छंदबद्ध बन उभरी ।
'नक्षत्र निपात'-'अनुरोध'-'स्वयं आगत' भरी ।।

मुकुटधर पांडेय :

'वाद' न भटके पद्धतियों पर ही चले ।
नूतन पद्धति रचना 'आँसू' 'उद्‌गार' ढले ।।

पं० बदरीनाथ भट्ट :

भावव्यंजक औ अनूठे गीत रचे-पचे ।
सन् उन्नीस सौ तेरह से पहले से रचे ।।

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी :

जीवन औ जगत् का विस्तृत क्षेत्र सजा ।
प्रकृति - प्रेम भक्ति - धर्म सार्वभौम मजा ।।
मन गुबार आंदोलित आत्मा नवजागरण उजास ।
छायावाद आकांक्षा लक्ष्य स्वतंत्र व्यंजना भास ।।
अज्ञेय और अव्यक्त शब्द भरी कामवासना ।
बही न हिंदी काव्य अधूरी रही कामना ।।
उपनिषद् ब्रह्म - जगत् मत भिन्न - भिन्न ।
काव्य नहीं शायद स्त्री - पुरूष परिछिन्न ।।
'छायावाद' काव्य-शैली रहस्यवाद से 'प्रतीकवाद' ।
नवयुग कवि रचनाएँ कलाजड़ 'कलावाद' ।।
'कनक प्रभात'-'स्वर्णसमय'-'स्वप्निल क्रांति' शब्द नवल ।
अजायबघर में जानवर कविता ऐसी हास्य प्रबल ।।
रीतिकाल में रूप बदल श्रृंगारी कविता छेंकी ।
प्रकृति सुंदरी नैसर्गिक पल्लव स्त्री अंग भेंटी ।।
'प्रसाद'-'निराला' रचना वाक्य वैलक्षण्य अर्थभूमिमय ।
'वाद' भिन्न-भिन्न नरेतर प्राणी चर-अचर जीवमय ।।
स्वच्छंदता पथ चिह्न काव्य-धारा अनूप-सी ।
सरस पदावली लिए सहारा लाक्षणिक रुप-सी ।।

ब्रजभाषा काव्य परंपरा :

ब्रजभाषा रचना संसार मन मोह मंच उभार ।
खड़ी बोली निज उत्साह - बल सँवार ।।
ब्रजभाषा माधुर्य अनूप नव सज्जा आकार ।
संस्कृत शब्द प्रयोग सहज स्वभाव प्राकार ।।
रत्नाकर की 'उद्धवशतक'-'बुद्धचरित' प्रबंध काव्य ।
श्री वियोगी हरि 'वीर सतसई' पाया मंगला प्रसाद भाव्य ।।
रामनाथ ज्योतिषी 'रामचंद्रोदय' देवपुरस्कार ।
केसरी सिंह बारहठ 'प्रताप चरित' काव्य बहार ।।

२. द्विवेदीकाल में प्रवर्तित खड़ी बोली की काव्यधारा :

खड़ी बोली कविता इतिवृतात्मक अभिव्यंजक ।
भाषा का स्निग्ध-प्रसन्न-प्रांजल प्रवाह सौंदर्यात्मक ।।
प्रचलित संघटित छंद राग-अलाप लयवंदक ।
कल्पना औ भाव से ऊपर मन रंजक ।।

ठाकुर गोपाल शरण सिंह :

मार्मिक विषय खड़ी बोली पुस्तक पाँच बनी ।
'माधवी'-'मानवी'-'संचिता'-'ज्योतिष्मती'- 'कादंबिनी' ।।

अनूप शर्मा :

ओजस्विनी वाग्धारा ब्रजभाषा फिर खड़ी बोली ।
खंडकाव्य 'सुनाल' महाकाव्य 'सिद्धार्थ' बोली ।।

जगदंबाप्रसाद 'हितैषी' :

कवित्त - सवैया सरस भंगिमा निराली ।
'कल्लोलिनी' - 'नवोदिता' फुटकल विराली ।।

श्याम नारायण पांडेय :

'त्रेता के दो वीर' लक्ष्मण - मेघनाद युद्ध रचा ।
'हल्दीघाटी' महाकाव्य सत्रह सर्ग उत्साह मचा ।।

पुरोहित प्रताप नारायण :

महाकाव्य उन्नीस सर्ग 'नल नरेश' रोला-हरि गीतिका ।
'मन के मोती'-'नवनिकुंज' फुटकल खड़ी रीतिका ।।

तुलसीराम शर्मा 'दिनेश' :

दो सौ बहत्तर पृष्ठ पुरूषोत्तम कृष्ण काव्यग्रंथ ।
कृष्ण-बलराम-रूक्मिणी नव परिस्थिति दशा कथ ।।

छायावाद
(सन् १९१५-१९३५)

छायावाद अर्थ दो रहस्यवाद-काव्य शैली महादेवी वर्मा ।
संत-साधक प्राचीन तुरीयावस्था - आध्यात्मिक शैली धर्मा ।।
काव्य शैली प्रतीकवाद छाया रूप अप्रस्तुत कथन ।
पंत - प्रसाद - निराला प्रतीक या चित्र भाषा सृजन ।

जयशंकर प्रसाद :

'चित्राधार' संग्रह ब्रजभाषा पुनः खड़ी बोली विकसे।
'काननकुसुम'-'महाराणा का महत्व'-'करूणालय'-'प्रेमपथिक' निकसे।।
प्रेमविलासमय मधुर पक्ष स्वाभाविक रूचि रमती।
प्रकृति अनंत रूप 'आँसू' श्रृंगारी विप्रलंभ संयोग सुख भरती।।
प्रियतम स्मृति दिव्य विभूति प्रेमी मादक बेसुधता अश्रु बहाती।
'लहर'-'कामायनी' सुख-भोग-कांति- दीप्ति प्रकृति परिधि सताती।।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' :

संगीतमय काव्य औ काव्यमय संगीत पहचान ।
पद्यो में चरणों की स्वच्छंद विषमता बेमेल तान ।।
स्वच्छंद कवित्त निर्भीक प्रेम लोकहितवाद ।
'वह तोड़ती पत्थर' श्रमिक कष्ट उद्वेलनसाद ।।

सुमित्रानंदन पंत :

प्रकृति के सुंदर रूपों की आहलादमयी अनुभूति योगता ।
'वीणा'-'ग्रंथि'-'पल्लव' रचनाएँ पुरानी धारा शोधता ।।
चित्रमयी लाक्षणिक भाषा औ रूपक भरा संसार ।
शक्ति तीव्र मर्मवेदना हुई प्रतिष्ठित मर्मसार ।।
'अहे निष्ठुर परिवर्तन' ! अहे वासुकि सहस्रफन ।
'पंतकवि' स्वच्छंद प्रभारी स्वाभाविक शैलीजन ।।

'नीम' चित्रण शहद चाटने-गुलाब सूँघने वाले निराशी ।
मंगल का अमंगल गत्यात्मक कर्म सौंदर्य हिताशी ।।

महादेवी वर्मा :

रहस्यवाद भीतर अज्ञात प्रियतम विरहिन ।
रहस्य के संग रहस्य ही रहस्य प्रियतम निरखिन ।।
अंनत सुषमा - अपार वेदना विश्व छोर एक मन ।
'नीहार'-'रश्मि'-'नीरजा'-'सांध्यगीत'- 'यामा' संग्रन ।।
गीत सभी स्निग्ध-प्रांजल पदावली कवयित्री महक ।
हृदय की ऐसी विचित्र भाव-भंगिमा सर्वत्र चहक ।।
कुछ कवि छायावादी मोहनलाल महतो 'वियोगी'-नरेंद्र शर्मा ।
रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'-आरसी प्रसाद-भगवतीचरण वर्मा ।।

स्वच्छंद धारा :

स्वच्छंद धारा बही तीव्र गति समष्टि रूप ।
छायावाद कवि प्रथक समष्टि स्वच्छंद सरूप ।।
पं० माखनलाल चतुर्वेदी - सियारामशरण गुप्त जान ।
पं० बाल कृष्ण शर्मा 'नवीन'-श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ।।
श्री हरिवंशराय 'बच्चन' - श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' ।
ठाकुर गुरूभक्त सिंह औ पं० उदयशंकर भट्ट वर ।।
हिंदी कविता प्रवाह चल पड़ा विभिन्न धाराएँ ।
अलग-अलग विशेषता छायावाद भिन्न व्यक्ताएँ ।।
कलकल बहता निर्भय पथ हिंदी कविता प्रवाह ।
रूप अनेक सोच स्वभेद रूचिकर गुँजित सुभाव ।।
श्री रामचंद्र शुक्ल महारथी 'हिंदी साहित्य इतिहास' ।
शोधनीय - श्लाघनीय - संचनीय शिक्षार्थी पास ।।
बहुमूल्य गुणन से पूर्ण रचना सुलभ सुभाव ।
भविष्य लाभ की आश धर भर स्व-भाव ।।

उत्तर छायावाद
(सन् १९३५-१९६४)

उत्तर छायावाद उमंगित ज्ञान चक्षु प्रगाढ़वाद ।
दो भागों में विभक्त प्रगतिवाद-प्रयोगवाद ।।
प्रयोगवाद ने जन्मा 'नूतन कविता' राग ।
जनमें पाँच प्रमुख समीक्षक चिंतन अनुराग ।।

प्रगतिवाद समीक्षक :

डॉ० नामवर सिंह-अमृतराय :

आलोचक कद्दार सुप्रतिष्ठित साहित्यकार ।
साहित्यकार प्रगतिवाद कवि सुहृदययार ।।

डॉ० रामविलास शर्मा-शिवदान सिंह चौहान :

अक्खड़ बुद्धिमान हिंदी साहित्य पुरोधा ।
साहित्यकार भाषा हिंदी सरस सुशोधा ।।

प्रकाशचंद गुप्त :

प्रकाशचंद गुप्त कवि प्रगति संबोधा ।
निराला - पंत - नरेंद्र शर्मा शोधा ।।

प्रमुख कवि :

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'-बाल कृष्ण शर्मा ।
'दिनकर' - 'नागार्जुन' - रामविलास शर्मा ।।
केदारनाथ अग्रवाल-शिवमंगल सिंह 'सुमन' ।
मुक्तिबोध-रांगेय राघव-त्रिलोचन प्रमन ।।

गजानन माधव 'मुक्तिबोध' :

एक ललकार विलासी बुद्धिमति कोसी दासता ।
पाई विशिष्टता कवि समाज हुए अग्रजा ।।

शिवमंगल सिंह 'सुमन' :

कविता सुगढ़ सुहानी गायक प्रसिद्ध भए ।
शिक्षक - सुनिरीक्षक वाजपेयी भए ।।

नरेंद्र शर्मा :

प्रतिभा संपन्न प्रणय गीत भाव प्रवीण क्रांतिकारी कविता ।
मर्म स्पर्शी गीत साधक मंच-फिल्म मन जन मुग्धिता ।।

रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' :

'त्यागपथी' खंडकाव्य ऐतिहासिक सम्राट हर्ष बढ़ता ।
कवि रचना त्याग तपस्या पवित्र भाष्य गढ़ता ।।

रामधारी सिंह 'दिनकर' :

विद्रोह विस्फोट-ओज सौंदर्य व्यंग व्यक्तित्व निराला ।
कला स्वप्न सौंदर्य वर्तमान युग कविता उजाला ।।

नागार्जुन (वैद्यनाथ मिश्र) :

प्रमुख काव्य कृति युगधारा - सतरंगे पंखों वाली ।
तुमने कहा था- मैं मिलिटरी का बूढ़ा घोड़ा मैथिली भाषी ।।

प्रयोगवाद प्रवर्तक :

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' ।
सप्तक चार निकाले सात कवि सुध लेय ।।

प्रमुख कवि :

तार सप्तक :

गजानन माधव 'मुक्तिबोध'-नेमिचंद्र जैन ।
भारतभूषण अग्रवाल सब कुछ कहैन ।।
प्रभाकर माचवे-गिरिजाकुमार माथुर-'अज्ञेय' शान ।
रामविलास शर्मा मिल सात कविवर मान ।।

दूसरा सप्तक :

भवानीप्रसाद मिश्र – शकुंत माथुर – हरिनारायण व्यास ।
शमशेर बहादुर–नरेश मेहता–धर्मवीर 'भारती'–रघुवीर सहाय ।।

तीसरा सप्तक :

प्रयागनारायण त्रिपाठी–कीर्ति चौधरी–मदनवात्स्यायन–सिंह केदारनाथ ।
कुँवर नारायण–विजयदेव नारायण साही–सर्वेश्वर दयाल ।।

चौथा सप्तक :

अवधेश कुमार–राजकुमार कुंभज–स्वदेश भारती–नंदकिशोर ।
सुमन राजे – श्रीराम वर्मा – राजेंद्र किशोर ।।

नई कविता कवि :

जगदीश गुप्त – रामस्वरूप चतुर्वेदी ।
गिरिजा कुमार माथुर – 'अज्ञेय' वेदी ।।
भवानी भाई – नरेश मेहता–धर्मवीर 'भारती' ।
कीर्ति चौधरी–मदन वात्स्यायन–केदारनाथ सारथी ।।
कुँवर नारायण – विजयदेव नारायण ।
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना – लक्ष्मीकांत पारायण ।।
राजेंद्र किशोर – मलयज – इंद्रनाथ मदान ।
दुष्यंत कुमार – बालकृष्ण राव जान ।।
अजीत कुमार – इंदू – अश्वघोष ।
नलिन विलोचन शर्मा – कुँवर पाल जोश ।।

अकविता कवि :

सोमित्र मोहन – चंद्रकांत देवनाले ।
श्याम परमार–गंगा प्रसाद विमल हाले ।।
राजीव सक्सेना – नरेंद्रधीर ।
रमेश गौड़ – मुद्राराक्षस वीर ।।

गीत-नवगीत कवि :

नवल व्यंजना नई सोच नव भावभंगिमा ।
नया विचार नया उद्‌बोधन भाषा-शब्द संगिमा ।।
साठ दशक 'गीत' परंपरा जन्म सबोधा ।
उपमान नवल नव प्रतीक नवगीत गुंज पौधा ।।
गीतों संग चली बहार गजल सुसज्जित ।
सोम ठाकुर-कुँअर बेचैन-गोपाल दास 'नीरज' मज्जित ।।
काका हाथरसी-निर्भय हाथरसी-अवस्थी ब्रजेंद्र ।
उर्मिलेश शंखधार और सुरेश चतुर्वेदी केंद्र ।।
शिशुपाल सिंह 'निर्धन'-भारत भूषण ।
कविता हुई यथार्थवादी आभूषण ।।
लोक कल्पना उतर गोद धरती आई ।
कवि सम्मेलन मंच सज जन-मन छाई ।।
अर्थ - पूर्ण सज - धज क्षणिकाएँ ।
सरोजनी 'प्रीतम'-मिश्रीलाल जैसवाल छाएँ ।।
गद्य-पद्य साहित्य शिरोमणी पाए ।
डॉ० विद्यानिवास मिश्र साहित्य जगाए ।।
लेखक - कवि अनेक नवयुग उद्‌भव ।
वर्तमान - आशा - अध्ययन - चिंतन भव ।।
मनन - सृजन विषय उन्नयन उमगे ।
विद्वत - विदुषी भारतभूमि पुष्पित उगे ।।
भिन्न - विभिन्न मत मतांतर लेखन नेक ।
नारी - नर समीक्षक आलोचक अनेक ।।

छंदबद्ध - छंदमुक्त अतुकांत - हाईकू ।
जनक छंद - मुक्तक - गजल - हजलू ।।
हास्य - विरह राजनीति देश - प्रेम ।
चिंतन दलित - विमर्श विदेश - प्रेम ।।
लेख निबंध ललित लोक साहित्य सजा ।
पत्र - पत्रिका संस्कार साहित्य अमृत रचा ।।
अति सुखद सुमंगल बाल-काव्य ।
बाल साहित्य कहानी रूचि भाव्य ।।
लिखने लगे अनेक रचना कर ।
भाव कुमुद कोमल कुसुमाकर ।।
बुद्धि - शुद्धि समृद्धी बिखरी मन ।
बालक चमके पूर्ण चंद्र बन ।।
'नारी-विमर्श' अखिल विश्व जगा ।
नैसर्गिक गुण हाव-भाव उर पगा ।।
विलुप्त नारी अधिकार विदेशी राज ।
बिगुल बजा 'स्वतंत्रता जन्म सिद्ध साज' ।।
इक्कीसवीं सदी आई लेकर उन्माद ।
वैश्वीकरण आर्थिक उदारतावाद ।।
साहित्य ने करवट कुछ यूँ ली ।
हिंदी भाषा विश्व पटल फैली ।।

ओशो-ओशो

ऋषि तुल्य अनबोल बोल 'रजनीश' प्रवचन माने
रजनीश चंद्र मोहन 'ओशो' नाम इतिहास बखाने ।
अभिभूत धरा ब्रह्मांड-कोष ज्ञानी-ध्यानी पहचाने
शब्द-शब्द अनमोल अर्थ-संहिता शुचिता अनुमाने ।।

भंडार-ज्ञान गूढ़-सरल मानव-रहस्य सुलझाए
प्रेम-ईश-भक्ति-वारीश-ध्यान-कला गंतव्य बताए ।
गढ़ घोली गाथाएँ समझ राह जीवन मुस्काए
गहन-खोज अंतरिक्ष-सोच अध्यात्म-शिखर धाए ।।

'रजनीश' बोल-अनमोल वाणी भर दीने
अध्यात्म-सत्य-कैवल्य-प्राण जगती-जन दीने ।
वेद-पुराण-उपनिषद्-गीता-बुद्ध-महावीर चीने
ऋषि-मुनि-आत्म-शुद्धि प्रवचन भीने-भीने ।।

परम सुधी नारी प्रकृति अलख-निरंजन जाना
भक्ति-ध्यान-प्रेम अधिकारी प्रभु-द्वार माना ।
पंचतत्व की कला सुगढ़ दुस्तर राहें सुलझाना
कथा-कहानी रूपभरी जन-जीवन सरल बनाना ।।

तीन लाख संन्यासी तारे भवसागर पार कराना
त्याग-समर्पण सीढ़ी चढ़ मानव-मन मुस्काना ।
संस्कृत-मंत्रण वाणी गूँजी हुआ विभोर विश्व माना
अखंड-गूँज फैली धरणी पर आत्म-ज्ञान जाना ।।

ऋणी हुआ साहित्य-जगत् अमीय मिला उपदेश
साढ़े छह सौ कृतियाँ रच धन्य हुआ यह देश ।
स्मरणीय बानी अमर-बोल 'रजनीश' देश
सदियों तक आएँगे याद 'ओशो' देश-विदेश ।।

ले समाधि हो गए विलीन संसार-असार भया
मिला तेज से तेज समग्र ईश्वर भेद गया ।
आत्म-ज्योति साहित्य-सितारा हुआ ब्रह्मांड मया
ज्योतिर्मान हुआ जग सारा प्रकाश-पुंज 'ओशो' गया ।।

हुआ न कोई ऐसा ज्ञानी-ध्यानी 'ओशो' नाम कमाए
ज्ञान-मणि दीपक-भक्ति ज्ञानी जन भर-भर लाए ।
स्वयं तरे तारे अनेक भक्त सस्वर संज्ञाए
स्मृति सदियाँ सदा रखेंगी 'ओशो' ईश सहाए ।।

उद्‌बोधन

रचें-बुनें कविता कवि ध्यानी ।
बने भविष्य साहित्य अनुदानी ।।
हिंदी साहित्य करे भरोसा शुभभरा ।
भविष्य कवित्व साहित्यिक यशभरा ।।
लिखें कवित्त उच्च कोटि सकारात्मक ।
शिक्षार्थी-पाठक पढ़ हों करूणात्मक ।।
है विश्वास विज्ञान - उन्नति ।
भर देगी साहित्य ज्ञान - निधि ।।
भारत में फिर धार अमृत झर ।
काव्य - जगत् महके सागर भर ।।
भारत - भूमि भाषा हिंदी - प्रद ।
विश्व - स्थल हिंदी उन्मुक्त - प्रख ।।
सर्वप्रिय कथनीय कोमलांगी ।
जननी भाषा सब जन मांगी ।।
है पुकार गूँजे स्वर यश ।
राष्ट्रभाषा हिंदी विश्वश ।।
गौरवगाथा फिर यूँ गूँजे ।
आदि भाष्य हिंदी बन पूजे ।।
करें प्रनाम भारत - भारती ।
भाषा हिंदी भारतीय - आरती ।।
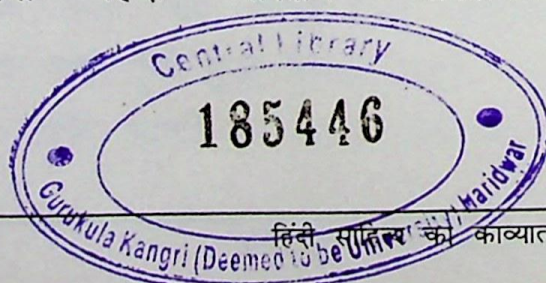
निज भाषा बिन शून्य है, फल-छाया बिन वृक्ष ।
निज सम्मान पहचान है, हिन्दी भाषा अध्यक्ष ॥
राष्ट्रहित सर्वोपरि है, हिन्दी हितोपदेश ।
एकजुट गले लगाना है, हिन्दी समृद्धोध्यैय ॥

रजनी प्रकाशन
रजनी विला, डिबाई-203393
जिला- बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश, भारत.
मोबाइल : +91-9412653980

मूल्य : रुपये 250/-

AKHIL COMPUTERS & PRINTERS # +91-9412744467